



वराणसी EDUCATION

हिंदी Typing

Practice Book



ADDRESS



2nd Floor, Ganga Palace, Arya Kumar Road, Near Dinkar Golambr, Patna-4

Contact Number:- 9122515245, 7091370995

Hindi Remington (GAIL)



Varanyam EDUCATION, Patna

Keyboard Key	With Shift	Without Shift
~	ঁ	ঁ কে নীচে কা বিন্দু
1	পূর্ণ বিরাম	১
2	/	২
3	:	৩
4	*	৪
5	-	৫
6	:	৬
7	,	৭
8	ঁ	৮
9	ঁ	৯
0	ঁ	০
- চিন্হ	ম. প্র. কা বিন্দু	; অর্থ বিরাম
+ চিন্হ	হলত	কৃ কা র
\)	(

Remington/Typewriter/Inscript	Conjuncts
-	
Key combinations	
দ + halant + দ	দ্
দ + halant + ধ	দ্ধ
দ + halant + ব	দ্ব
দ + halant + ম	দ্ম
দ + halant + য	দ্য
দ + halant + ব	দ্ব
দ + halant + ন	দ্ন
দ + halant + গ	দ্গ
দ + halant + ঘ	দ্ঘ
হ + halant + ম	হ্ম
হ + halant + ল	হ্ল
হ + halant + ব	হ্ব
হ + halant + ন	হ্ন
হ + halant + য	হ্য
ষ + halant + ট	ষ্ট
ষ + halant + ঠ	ষ্ঠ
ত + halant + ত	ত্ত
ক + halant + ত	ক্ত
শ + halant + চ	শ্চ
শ + halant + ব	শ্ব
শ + halant + র	শ্র

वरण्यম EDUCATION

Call@ 9122515245, 9534796936

**SHORTHAND CLASS, TYPING CLASS
COMPUTER CLASS- ADCA, DFA, TALLY**

CPT, CCC, BELTRON, CIVIL COURT

Add. 2nd Floor Ganga Palace, Arya Kumar Road
Near Dinkar Golambar, Patna-4

वरण्यम EDUCATION

2nd Floor, Ganga Palace, Arya Kumar Road, Near Dinkar Golambr, Patna-4 9122515245

अभ्यास 1

प्रत्येक शब्द को चार वार लिख

a	s	d	f	g	h	j	k	l	;	'
ঁ	ং	ক	ঁি	হ	ঁী	ৰ	ঁা	স	য	ঁ

কার কাক সার সিংহ হার রায় রংক কোরা হরি হারে সেক কহী সহারা রহী সীর রাহ রাস কিস
সির সহী সিহর হংস রহস সরস হের কংকর কিয়া সিরা যা কে কি যী যে সিরা রিহা সারী
রাহী হিংসক সরায় কেসর সিরা রিহা সারী রাহী

Shift keys কा প্রয়োগ করে

অভ্যাস 2

প্রত্যেক শব্দ কো এক লাইন লিখ

A	S	D	F	G	H	J	K	L	:	"
ঠ	ঁৈ	ক	ঁ	ঁল	ঁ	শ্ৰ	ঁজ	ঁ	ঁু	ঁ

শ্রী ভী থী কেরু ছি শ্ৰেয রথ যথা কথা রথী কোষ হাথ জাস থাহ থারু যজ রুস কাস্য
ভাষ্য হাস্য স্যাহ শস্য রস্সী শ্ৰীসৱ কককা কককী হুককা হথযিাৰ কীস্সা স্যাহী
কিস্সে ভৱিযে ভৱহে শ্ৰেয়স জাসক কঠহী কঠেষী কিসকে

অভ্যাস 3

প্রত্যেক শব্দ কো এক লাইন লিখ

ঁু	ঁূ	ম	ত	জ	ল	ন	প	ব	চ	ঁু	,
ঁু	ঁূ	ম	ত	জ	ল	ন	প	ব	চ	ঁু	,

মত জল চখ পচ বন কপ চখ চনা চার পান মান খান নাম পাপা পাপ চমন জলন
খলন চখত মজাল মজাক মজার চপাতী নহাতী তীরথ ভৱনী কৰনী খজানা নমস্তে
ভৱপূত কুমার জনমত কৰতব নমকীন চমকীন চমাকীলা মলীনতা খলভলী কুমারী
মহমল মহল চহকনা মনমানী কৰামতী জলজীৱা মামাজী

Shift keys কা প্রয়োগ করে

অভ্যাস 4

প্রত্যেক শব্দ কো এক লাইন লিখ

ঁু	ঁূ	ম	ত	জ	ল	ন	প	ব	চ	ঁু	,
ঁু	ঁূ	ম	ত	জ	ল	ন	প	ব	চ	ঁু	,

वरण्यम EDUCATION

2nd Floor, Ganga Palace, Arya Kumar Road, Near Dinkar Golambr, Patna-4 9122515245

कश्चा श्रमा पश्ची वत्य मम्मी कच्चा लल्ला मुल्ला मेम्ना चच्चा जल्म सत्य म्यान सत्या
वूलेन वॉमन कचरा शरीक म्यानी प्यास वत्य मम्मी कच्चा लल्ला मुल्ला मेम्ना मम्मी
चच्चा जल्म सत्य म्यान सत्या वूलेन वॉमन शरीक म्यानी प्यास प्यासी प्लॉवर पुख्ता
कैम्पस पुख्तून सप्ताह व्यवहारी साप्तहिक साहसिक वामनजी सैम्पूक कैम्पलॉन
साहित्य साहित्यिक सामाजिक कम्मलून हम्मारिष

अभ्यास 5

प्रत्येक शब्द को एक लाइन लिख

z	x	c	v	b	n	m	,	.	/
'	ग	ब	अ	इ	द	उ	ए	उ	६

ग्रह अब ब्रज धन ध्रव अग्र ध्यान उदय मलय ऐनक उबल ब्रोकेन एकाग्र ग्रहण उधर
इधर एकग्रता उकसाना अब तक अधिकारी अध्याय

Shift keys का प्रयोग करें

अभ्यास 6

प्रत्येक शब्द को एक लाइन लिख

z	x	c	v	B	N	M	<	>	?
'	उ	ए	ट	ठ	छ	ड	ढ	झ	ঢ

झरना ठहाका ठठेरा ठिकाना ठहाका गब्बर ग्यारह छब्बन छप्पन झरझार टमटम टर्टर्ट
ठाटबाअट ज़ारा झण्डावाला छिछालेदार

अभ्यास 7

प्रत्येक शब्द को एक लाइन लिख

No	'	1	2	3	4	5	6	7	8	9	0	-	=	\
Without Shift	়	১	২	৩	৪	৫	৬	৭	৮	৯	০	;	ং	(
With Shift	ঘ	।	/	:	*	-	'	'	ঢ	ব্র	ঞ্চ	.	ং)

ত্ৰেতা ত্ৰুটি ত্ৰিক ত্ৰাহি ত্ৰাসা ত্ৰয় ত্ৰাসক ত্ৰিযুগী ত্ৰিবিক ত্ৰিকুটী ত্ৰিপাঠী ত্ৰিবেণী ত্ৰিভুবন ত্ৰিবিক্ৰম
ত্ৰৈকালিক ত্ৰিদো ত্ৰিলোচনা ত্ৰিপিচনা ত্ৰিপিতানা ট্ৰায়ল ড্ৰামাবালা ট্ৰেট্ৰাঅঞ্কসাইড কট্টৱৰ গট্টৱৰ

वरण्यम EDUCATION

2nd Floor, Ganga Palace, Arya Kumar Road, Near Dinkar Golambr, Patna-4 9122515245

रदीवाला चिह्नदार ब्रह्ममाजी गदीदार श्रद्धालु उद्धारक अर्द्धमास सिद्धार्थजी ऋषभ
ऋत्विज ऋजुता ऋणाण ऋचाए ऋग्वेद

हरदिन प्रैक्टिस जरूर करे ये सभी सब्द को

दिसम्बर अक्टूबर भारतवर्ष पल्लव पगड़ दिग्गज यथार्थ ग्राहक भ्रमण टमटम वाक्य
शक्तिशाली प्रभावशाली बलशाली श्रद्धापूर्वक बलपूर्वक चरणामृत प्रकृति ज्वालामुखी
पर्वत इतिहास राजनीतिज्ञ स्वस्थ व्यापारी विश्वविद्यालय केन्द्र केन्द्रीय स्वार्थी नगण्य
पर्याप्त उपरान्त उपयुक्त निदेशक अनुसंधान महामंत्री प्रधानमंत्री संचारमंत्री अखिल
भारतीय कांग्रेस कमेटी, संयुक्त राष्ट्रसंघ दक्षिण कोरिया, उत्तरी कोरिया यूनेस्को,
अव्वारह चाणक्य आसक्त रक्त क्योंकि भाग्यवान प्रमुख पलप्रपात श्वेत पर्थिक भाषण
सूक्ष्म महालक्ष्मी असभ्य कच्छ उपलब्धता अपव्यय पुराण वैदिक फुव्वारा श्वेत प्यासा
हल्ला मजदूर परिषद अकाली दल कम्युनिष्ट पार्टी भारतीय जनसंघ महाराष्ट्र
आनबान आन्ध्र उड़ीसा आश्चर्य शतक शताब्दियों अतिवृष्टि संकट परिश्रम व्यवस्था
प्रादेशिक प्रोफेसर प्रिन्सिपल प्रसिद्ध स्वतंत्र गर्ल्स वर्तमान प्राचीन नवीन बल्लभ
विपत्ति सम्मान हिम्मत कुलांगार उन्नति राष्ट्रीय ध्वज कुप्पी भत्ता फन्ड अन्तरिक्ष
भौतिक ग्रामीण उपभोक्ता आन्दोलन यूनियन सम्पादक उत्पादक प्रोत्साहन सर्वोपरि
उद्देश्य ब्राह्मण हृदेश विश्लेषण अपेक्षाकृत व्याख्यानदाता कर्मचारियों कंपनियों प्रदर्शन
स्तरीय समन्वित भण्डारण कार्यक्षेत्र

अयोध्या के भूपति श्री दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र श्री रामचन्द्र जी ने रावण
से घमासान युद्ध में उसकी नाभि में अमृत का भेद ज्ञात हो जाने पर झटपट
रथ पर चढ़कर अपने प्रचण्ड बाणों का उसकी नाभि पर ऐसा प्रहार किया
जिससे कुछ ही क्षणों में उसके प्राण पखेरू हो गये। ऋषियों का कहना है
कि ऐसा विद्यावान मनुष्य अर्थात् रावण की प्रकृति वाला व्यक्ति कभी सफल
नहीं हो सकता इसलिए मनुष्य को कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए।

वरण्यम EDUCATION

2nd Floor, Ganga Palace, Arya Kumar Road, Near Dinkar Golambr, Patna-4 9122515245

उपरोक्त सिम्बल/ वर्ण की-बोर्ड के सामान्य बटन से बनाये जा सकते हैं, लेकिन इनके अलावा कुछ सिम्बल जैसे-ह, ह्य, ट्र, ह्ल, आदि बनाने के लिए जानकारी निम्नानुसार है :-

- ट्र बनाने के लिए - ट एवं Z बटन
- ह्ल बनाने के लिए - ह एवं + बटन
- कृ बनाने के लिए - क एवं + बटन
- फ् बनाने के लिए - फ एवं + बटन (शिफ्ट के साथ)
- ऊ बनाने के लिए - उ एवं Q बटन (शिफ्ट के साथ)
- ई बनाने के लिए - इ एवं Z बटन (शिफ्ट के साथ)
- फ्ऱ बनाने के लिए - फ एवं Z बटन (शिफ्ट के साथ)

सामान्य : कीर्ति, पूर्ति, उफ, वर्ण और अन्य शब्द ई की तरह ही बनाए जाते हैं। यदि आप उफ लिखना चाहते हैं तो पहले उ बनाएं तथा स्पेस बार से आगे बढ़ें एवं वापिस आकर फिर फ बनाएं क्योंकि उ के बाद सीधे ही फ नहीं बनता बल्कि ऊ बन जाता है। इसी प्रकार रफ्तार, रफ, उफ आदि शब्द लिखे जाते हैं।

उपरोक्त शब्द एवं वर्ण के अलावा और भी कई वर्ण / शब्द होते हैं जो दो से अधिक वर्ण के मेल से बनते हैं जिनको बनाने के लिए हमें जानकारी होनी चाहिए कि वह किन-किन वर्ण के मेल से बनते हैं जैसे

1	ह एवं य से ह्य	सबसे पहले 'ह' बनाए फिर शिफ्ट के साथ '+' दबाये फिर 'य' दबाये
2	ह एवं म से ह्म	सबसे पहले 'ह' बनाए फिर शिफ्ट के साथ '+' दबाये फिर 'म' दबाये
3	ह एवं न से ह्न	सबसे पहले 'ह' बनाए फिर शिफ्ट के साथ '+' दबाये फिर 'न' दबाये
4	ह एवं र से ह्र	सबसे पहले 'ह' बनाए फिर शिफ्ट के साथ '+' दबाये फिर 'र' दबाये
5	द एवं भ से ह्द्ध	सबसे पहले 'ह' बनाए फिर शिफ्ट के साथ '+' दबाये फिर 'भ' दबाये
6	द एवं द से ह्द्द	सबसे पहले 'ह' बनाए फिर शिफ्ट के साथ '+' दबाये फिर 'द' दबाये
7	क एवं त से क्त	सबसे पहले 'ह' बनाए फिर शिफ्ट के साथ '+' दबाये फिर 'त' दबाये

YouTube- Varanyam Education

Remington Gail Character Typing Guide

इसी प्रकार अन्य वर्ण बनते हैं। जब हम दो या अधिक वर्ण को मिलाकर किसी नये वर्ण को बनाते हैं तो हमें पहले अक्षर को आधा करना होता है। रेमिंग्टन ले आऊट मे

वरण्यम EDUCATION

2nd Floor, Ganga Palace, Arya Kumar Road, Near Dinkar Golambr, Patna-4 9122515245

किसी भी अक्षर को आधा करने के लिए हलंत का उपयोग करना होता है जो शिफ्ट के साथ प्लस बटन दबाने से बनता है कुछ उपयोगी शब्द एवं वर्ण कि जानकारी निम्न है :-

- डॉ बनाने के लिए डा के बाद W के नीचे (शिफ्ट के साथ) दबाएं, इसी प्रकार कॉ फॉ, रॉ, आदि बनाए जाते हैं।
- ढ के नीचे बिंदी बनाने के लिए ~ (टिल्ड) बटन दबाएं, इसी प्रकार पढ़, चढ़, गढ़, आदि बनाए जाते हैं।
- ह्य बनाने के लिए ह के बाद प्लस (शिफ्ट के साथ) एवं म दबाएं, इसी प्रकार से ह्य, ह्य, ह्य आदि बनाए जाते हैं।
- ह्य बनाने के लिए ह के बाद प्लस बटन दबाएं, इसी प्रकार से कृ, पृ, मृ, आदि बनाए जाते हैं।
- द्द बनाने के लिए द के बाद हलंत लगाएं एवं पुनः द बनाएं इसी प्रकार छ्य, त्य, क्ख, छ्ख आदि बनाएं जाते हैं।

उपरोक्त वर्ण एवं शब्दों के अलावा अन्य ऐसे वर्ण भी होते हैं जो किसी वर्ण को मिलाकर नहीं बनाए जा सकते, जैसे -?, !, +, = आदि। रेमिंग्टन ले आऊट में ऐसे वर्णों को बनाने के लिए कुछ शॉर्टकट कीज निर्धारित हैं जो Alt के साथ प्रयुक्त होती है।

कुछ उपयोगी शॉर्टकट कीज निम्नानुसार हैं

- ❖ Alt & 33 से !
- ❖ Alt & 43 से +
- ❖ Alt & 61 से =
- ❖ Alt & 63 से ?

यूजर्स ? सिम्बल नहीं बना पाते क्योंकि विंडोज 7 से दायी तरफ का अल्ट बटन निष्क्रिय होता है। इसलिए अगर आप विंडोज उपयोग कर रहे हैं तो आप कों बायी तरफ वाले अल्ट बटन का उपयोग करना चाहिए



माननीय सभापति महोदय, प्रजातंत्र में शासन का संचालन प्रजा करती है, प्रजा का शासन में अधिक हाथ हो, यहीं प्रजातंत्र की सर्वश्रेष्ठता की कसौटी है। प्रजातंत्र की सफलता के लिए जनता की भावनाओं का जानना एवं जनता की आवश्यकताओं की पूर्ति करना भी आवश्यक है, समाचार-पत्र आधुनिक युग में मुक्त होकर कार्य करें तो प्रजा का सुख बढ़ जायेगा, यदि प्रेस राज्य के अंकुश में रहता है तो प्रजा की इच्छा की अभिव्यक्ति करना एक अपराध बन जाता है, और इस स्थिति में प्रेस की लोकप्रियता भी घट जाती है, प्रेस की दबी आवाज सरकार के पतन का कारण है, प्रजातंत्र की सफलता के लिए समाचार पत्रों को पूर्ण स्वतंत्र होना चाहिए। प्रेस के महत्व को सभी जानते हैं। इसके महत्व पर ध्यान न देना अत्यधिक बड़ी भूल है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को देश, विदेश की बात का जान समाचार पत्रों द्वारा ही होता है। प्रजातंत्र में समाचार पत्रों का बड़ा योगदान रहता है। लोकतंत्र प्रणाली महत्वपूर्ण होते हुए भी अत्यधिक जटिल है। प्रजातंत्र की सफलता आर्थिक विकास, धार्मिक स्थिति तथा जातीय एकता पर आधारित नहीं है। यदि प्रजातंत्र रूपी कल का एक पुर्जा भी घिसकर शिथिल पड़ जायेगा तो संपूर्ण लोकतंत्र की मशीनें संचालित होने से रुक जायेंगी। प्रजातंत्र के रूप में प्रेस द्वारा प्रकाश पड़ता रहता है। प्रेस की स्वतंत्रता के अनेक लाभ हैं प्रजातंत्र का वास्तविक रूप समाचार पत्रों में दिखाई देता है। प्रजातंत्र पर समाचार पत्र ही अंकुश रखते हैं और इसी उद्देश्य से समाचार पत्रों को स्वतंत्र रहना चाहिए। जन आंदोलन की अभिव्यक्ति भी प्रेस ही कर पाने में सफल हुआ। यहीं नहीं, युग के कवि दार्शनिक, संत एवं विचारकों के लेखों के समाचार पत्रों में स्थान पाकर आंदोलनों में जान ला दी और इन्हीं आंदोलनों के द्वारा प्रजातंत्र के गुण-दोषों पर विचार किया गया। आज तक जनता के आंदोलनों को समाचार पत्रों ने खुला समर्थन दिया। इससे प्रजातंत्र में जन जागृति के आंदोलनों का रूप मुखरित हो उठा। राष्ट्रीय जागृति एवं राष्ट्रीय भावना का विकास प्रेस ही कर पाया है प्रेस ने अपनी वाणी के जयघोष से जागृति उत्पन्न कर जनता की शक्ति को आंका साथ ही राज्य को बता दिया कि उसका एक तंत्र होना उचित एवं न्याय-संगत नहीं है। जनता के अधिकारों एवं कर्तव्यों का जान समाचार पत्रों ने ही बताया। जनता की गरीबी, भूखमरी उत्पीड़न एवं रोग-ग्रस्तता के कष्टों में समाचार पत्रों ने सहायता की है, समाचार पत्र शक्ति के साधन रहे, जन आंदोलन की चिंगारी को प्रज्वलित करते रहे।



अध्यक्ष महोदय, मेरा अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि हमारे क्षेत्र में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के लोग निवास करते हैं। यहां पर बिजली के तार टूटने, चोरी होने की घटनाएं बहुत होती हैं। परन्तु आज दिनांक तक इन घटनाओं को रोकने की व्यवस्था दुरुस्त नहीं की गई है। इस संबंध में जन-प्रतिनिधियों द्वारा सुचारू विद्युत व्यवस्था दुरुस्त करने के लिए अवगत कराया था, किंतु विभाग द्वारा ध्यान नहीं दिया जा रहा है और न ही समुचित कार्यवाही की जा रही है। इस अव्यवस्था के कारण अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के लोग अंधेरे में रहने के लिए विवश और मजबूर हो रहे हैं। अब ग्रामवासी विद्युत के अभाव में सिचाई, पढ़ाई, पानी जैसी मूलभूत सुविधाओं से वंचित हो रहे हैं। बिजली के अभाव में उनका विकास पूर्ण रूप से बाधित हो रहा है। जब कि वास्तविक रूप से अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति का विकास करना, केंद्र और राज्य सरकार की प्राथमिकता होना चाहिए। ऊर्जा विभाग के प्रशासन को अपने कर्तव्य के प्रति सजग रहना चाहिए। इस गैर जिम्मेदार रवैया की वजह से सारा गांव अंधकार में रह रहा है, जिसके कारण निवासियों में असंतोष है। अध्यक्ष महोदय, मेरा विधान सभा एक आदिवासी बाहुज्य क्षेत्र है, मुझे जात हुआ है कि भारत सरकार द्वारा प्रायोजित एक परियोजना के तहत यहां पर विद्युतीकरण संबंधी कार्य कराया गया था। उस समय घरेलू प्रयोजन के लिए किसी भी ग्रामवासी ने संयोजन नहीं कराया और जब कह रहे हैं कि गांव में बिजली नहीं है। इस संबंध में विभाग द्वारा तर्क दिया जा रहा है कि विगत वर्ष तार चोरी हो गये थे, इसलिए गांव विद्युत विहीन हो गया है। मांग के आधार पर गांव वासियों को परेशानी को देखते हुए मध्य प्रदेश विद्युत वितरण कंपनी द्वारा कैम्प लगाया जायेगा। जिसमें एक बत्ती कनेक्शन आवेदन के आधार पर दिया जाएगा। अतः इस ग्राम में पुनः विद्युतीकरण करने हेतु प्राक्कलन स्वीकृत किया गया है। निश्चित समय-सीमा में विद्युत प्रदाय करने के संबंध में आदेश जारी किये गये हैं। कार्य शीघ्र पूर्ण कराये जाने के प्रयास किये जा रहे हैं। अतः यह कहना सही नहीं है कि ग्रामवासियों में किसी प्रकार के आक्रोश जैसी स्थिति निर्मित हो रही है। इसलिए चन्द्रमा और सूर्य के आकर्षण के कारण बार-बार समुद्र के जल में चढ़ाव उतार होता है। चन्द्रमा आकर्षण में दूरत्व वर्ग के हिसाब से कमी होती है।



महोदय, हवा में चुनावों की चर्चा है। उत्तर प्रदेश, पंजाब, गोवा, उत्तराखण्ड और मणिपुर। इसके बाद कुछ और राज्यों के चुनाव। जैसे ही चुनाव आते हैं, विभिन्न जातियों, धर्मों और उनसे जुड़े दल अपने-अपने घोषणापत्र लेकर हाजिर हो जाते हैं। नए समीकरण बनने लगते हैं। आज तक जो विरोधी था, वह दोस्त हो जाता है और दोस्त पी-पीकर कोसने लगता है। यही हाल दूसरे समूहों का होता है। कोई महिलाओं के नाम पर, कोई ट्रांसजेंडर तो कोई पर्यावरण के नाम पर अपनी-अपनी मांगें उठाने लगता है। पिछले कुछ दशकों में जैसे-जैसे महिलाओं की शिक्षा बढ़ी और वे वोट का गुणा-भाग करने लगी हैं, वैसे-वैसे हर दल उनका हितैषी, दिखने की कोशिश करने लगे हैं। अपने-अपने दल के घोषणा पत्रों में उन्हें विशेष जगह दी जाने लगी है। आधी आबादी की निर्णयकारी क्षमता से दल घबराने लगे हैं। वे उन्हें अपनी तरु खींचने का प्रयास करते दिखते हैं, लेकिन जब एक वर्ग, समूह को आप अपनी तरफ खींचते हैं तो अक्सर दूसरे समूह पीछे रह जाते हैं और वे अपने को उपेक्षित महसूस करते हैं, क्योंकि विमर्श से, बहसों से उन्हें बाहर कर दिया जाता है। समझा यह जाता है कि ये समूह कहां जाएंगे। हमें ही वोट देंगे, लेकिन यह सच नहीं है। जब सरकारें किसी एक तरफ ध्यान देती हैं तो दूसरी तरफ इसकी प्रतिक्रिया होती दिखाई देती है। हो सकता है कि शुरुआती दौर में ये प्रतिक्रियाएं धीमी हों और उनकी आवाजों को नजरअंदाज कर दिया जाए, लेकिन चुनावी गणित में हाशियें की ये आवाजें अपने करतब दिखा देती हैं। आप सोचेंगे कि आखिर इन दिनों कौन सी वे आवाजें हैं, जिन्हें हाशियें की आवाजे कहा जा रहा है। ये आवाजे हैं- पुरुषों की। बहुत से लोग यह पढ़कर नाक-भौं सिकोड़ सकते हैं। इस लेखिका को स्त्री विरोधी होने का तमगा भी दे सकते हैं, लेकिन डरकर सच बात कहने से अगर रुक जाएं तो फिर लिखना, सोचना, समझना सब व्यर्थ है। कितने दशक हुए जब से आपने यह सुना कि सरकार गरीब पुरुषों के लिए भी कोई योजना बना रही है। उनकी पढ़ाई, लिखाई, रोजगार, चिकित्सा की व्यवस्था कर रही है? कह सकते हैं कि आखिर पुरुषों को इस तरह की योजनाओं की क्या जरूरत? वे तो पहले ही हर निर्णयकारी जगह पर बैठे हैं यानी यह मान लें कि पुरुष न तो गरीब होते हैं, न साधनहीन, फिक्र नहीं हाशिये के लोगों की।



महोदय, घर चाहे जितना भी छोटा हो, किंतु जब तक उसके आस-पास के घर भी समान आकार के होंगे, तब तक छोटे घर की आर्थिक, सामाजिक इच्छाएँ महत्वकांक्षाएँ पूर्ण हो सकती हैं, परंतु जैसे ही छोटे घर के पास एक बड़ी हवेली बन जाती है तो छोटा घर अपने मालिक की समाज में कम मांग और सीमित अधिकारों के बारे में स्थिति स्पष्ट करता है। लेकिन परिवर्तन और विकास प्रक्रिया के अनुसार वह छोटा घर बड़े घर में परिवर्तन हो जाता है, किंतु हवेली महल बन जाती है, इस परिस्थिति में जब जाहिर हो जाता है कि तब छोटे घर की उन्नति का कोई अस्तित्व नहीं रह जाएगा और छोटे घर का मालिक स्वयं को उपेक्षित, संकुचित, असंतुष्ट और तुच्छ महसूस करेगा। हमारे अर्थशास्त्री मार्क्स इसी स्थिति के असंतुलन को दूर करना चाहते थे, किंतु, उन्हें भी यह स्वीकार करना पड़ा था कि श्रम और पूँजी के हित एक हैं, किंतु अधिकार भिन्न-भिन्न हैं। पूँजी यदि रम को काम न दे तो श्रम चला जाएगा और यदि पूँजी श्रम पर शासन न किया जाए तो पूँजी का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। इसलिए यह आवश्यक है कि पूँजी श्रम पर अपना स्वामित्व कायम करे। मानव अधिकारों के उल्लंघन की समस्या व्यक्तिगत रूप से हल की जा सकती है किंतु संपूर्ण रूप से नहीं, क्यों कि किसी भी स्थिति, बिन्दु विषय और वस्तु का संज्ञात्मक बोध हो जाने पर हम उस स्थिति से बिन्दु से, विषय से, और वस्तु से मुक्त हो जाते हैं। जैसे ही हमें परतंत्रता का बोध होता है। हम परतंत्रता से मुक्त होकर स्वतंत्र हो जाते हैं, अमरत्व का बोध होते ही हम जान लेते हैं कि मृत्यु सिर्फ एक स्थिति है अंत नहीं और जिसका अंत नहीं हो अमर है। इन उल्लंघन के प्रति विद्रोह कर इस कमजोरी से मुक्त हो जाते हैं और अपने अधिकारों का प्रयोग करते हैं, किंतु वैशिक तौर पर जब तक मानवीय विचारों के माध्यम चलती रहेगी, तब तक मानव अधिकारों का उल्लंघन होता ही रहेगा और हम उल्लंघन करने को बाध्य हो जायेंगे। माननीय अध्यक्ष जी, मेरा प्रथम प्रश्न यह है कि जब बंगलादेश विभाजन हुआ था उस समय विस्थापित उक्त जातियों को मध्यप्रदेश में भी बसाया गया था लेकिन उन्हें अनुसूचित जाति वर्ग में शामिल नहीं किया गया था। उक्त जातियों को शामिल करने के लिए माननीय मुख्य मंत्री जी के माध्यम से प्रधानमंत्री जी को पत्र लिखा गया था, परंतु आज तक दिल्ली से कोई निर्णय नहीं हुआ।



प्रदूषण हमारे जीवन के उन प्रमुख मुद्दों में से एक है, जो हमारी पृथ्वी को व्यापक स्तर पर प्रभावित कर रहा है। यह एक ऐसा मुद्दा है जो लंबे समय से चर्चा में है और 21वीं सदी में इसका हानिकारक प्रभाव बड़े पैमाने पर महसूस किया जा रहा है। हालांकि विभिन्न देशों की सरकारों ने इसके प्रभावों को रोकने के लिए कई बड़े कदम उठाए हैं, लेकिन अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना बाकी है। इससे कई प्राकृतिक प्रक्रियाओं में गड़बड़ी आती है। इतना ही नहीं, आज कई वनस्पतियां और जीव-जंतु या तो विलुप्त हो चुके हैं या विलुप्त होने की कगार पर हैं। प्रदूषण की मात्रा में तेजी से वृद्धि के कारण पशु तेजी से न सिर्फ अपना घर खो रहे हैं, बल्कि जीने लायक प्रकृति को भी खो रहे हैं। प्रदूषण ने दुनिया भर के कई प्रमुख शहरों को प्रभावित किया है। इन प्रदूषित शहरों में से अधिकांश भारत में ही स्थित हैं। दुनिया के कुछ सबसे प्रदूषित शहरों में दिल्ली, कानपुर, बामेंडा, मॉस्को, हेज़, चेरनोबिल, बीजिंग शामिल हैं। हालांकि इन शहरों ने प्रदूषण पर अंकुश लगाने के लिए कई कदम उठाए हैं, फिर भी उन्हें अभी एक लंबा रास्ता तय करना बाकी है। इन स्थानों की वायु गुणवत्ता खराब है और भूमि तथा जल प्रदूषण के मामले भी बढ़ते जा रहे हैं। अब समय आ गया है कि इन शहरों से प्रदूषण के स्तर को कम करने के लिए, यहाँ मौजूद प्रशासन एक ठोस रणनीति तैयार करके उसपर अमल करे। वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) एक सूचकांक है जिसका उपयोग सरकारी एजेंसियों द्वारा वायु प्रदूषण के स्तर को मापने के लिए किया जाता है ताकि आम लोग वायु गुणवत्ता को लेकर जागरूक हो सकें। जैसे-जैसे एक्यूआई बढ़ता है, इसका मतलब है कि एक बड़ी जनसंख्या गंभीर प्रतिकूल स्वास्थ्य प्रभावों का अनुभव करने वाली है। वायु गुणवत्ता सूचकांक यानी लोगों को यह जानने में मदद करता है कि स्थानीय वायु गुणवत्ता उनके स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित करती है। पर्यावरण संरक्षण एजेंसी (ईपीए) पांच प्रमुख वायु प्रदूषकों के लिए एक्यूआई की गणना करती है, जिसके लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय वायु गुणवत्ता मानक स्थापित किए गए हैं। यह मुख्य रूप से वाहनों से गैस के उत्सर्जन के कारण होता है। हानिकारक गैस कारखानों और उद्योगों में उप-उत्पाद के रूप में उत्पादित होती हैं, प्लास्टिक और पत्तियों जैसे जहरीले पदार्थों को खुले में जलाने से, वाहनों के एरजॉस्ट से, रेफ्रीजरेशन उद्योग में उपयोग किए जाने वाले सीएफसी से वायु प्रदूषण में बढ़ोतरी होती है।



पूरे मानव बिरादरी के लिये विज्ञान का अनोखा और पथप्रदर्शन करने वाला उपहार है कंप्यूटर। ये किसी भी प्रकृति का कार्य कर सकता है। किसी के भी द्वारा इसे संभालना सरल है और सीखने के लिये बहुत कम समय लगता है। अपने सुगमता और कार्य क्षमता के कारण इसका प्रयोग व्यापक तौर पर होता है जैसे- ऑफिस, बैंक, होटल, शिक्षण संस्थान, स्कूल, कॉलेज, दुकान, उद्योग आदि। कई लोग अपने बच्चों के लिये लैपटॉप और डेस्कटॉप खरीदते हैं जिससे अपनी पढ़ाई से संबंधित कार्य और कंप्यूटरीकृत विडियो गेम्स का आनंद ले सकें। कंप्यूटर एक बड़ा शब्दकोश और बड़ा स्टोरेज डिवाइस है जो किसी भी तरह के डेटा को सुरक्षित रखने के लिये है जैसे- कोई भी जानकारी, पढ़ाई से संबंधित सामग्री, प्रोजेक्ट, फोटो, विडियो, गाना, खेल, आदि। ये एक इलेक्ट्रॉनिक मशीन है जो गणना करने तथा बड़ी समस्याओं को सुलझाने में दक्ष है। ये हमारे कौशल को बढ़ाने में और आसानी से जानकारी प्राप्त करने में भी हमारी मदद करता है। ये एक डेटा आधारित मशीन है। ये हमें कई सारे टूल्स उपलब्ध कराता है जैसे- टेक्स्ट टूल्स, पेट टूल्स आदि जो बच्चों के लिये बहुत फायदेमंद हैं और विद्यार्थी इसे अपने स्कूली तथा प्रोजेक्ट कार्यों में काफी प्रभावपूर्ण रूप में उपयोग कर सकते हैं। कार्य स्थल, शिक्षा के क्षेत्र में तथा निजी उपयोग के लिए कंप्यूटर का बहुत ही महत्व है। पुराने समय में हम सारे काम अपने हाथ से करते थे लेकिन आज कंप्यूटर की सहायता से खातों के प्रबंधन, डेटाबेस बनाने, आवश्यक जानकारी संग्रहीत करने जैसे विभिन्न उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कंप्यूटर का उपयोग किया जाता है। आजकल हर कोई इंटरनेट के जरिये कंप्यूटर पर काम करना आसान मानता है। वास्तव में आज के समय कंप्यूटर हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। हम इसका प्रयोग बड़े और छोटे गणितीय गणनाओं के लिये सटीक ढंग से कर सकते हैं। इसका उपयोग मौसम की भविष्यवाणी, किताब, न्यूज पेपर, डाइग्नोजिंग बिमारी की छपाई आदि के लिये किया जा सकता है। इसका इस्तेमाल दुनिया के किसी भी कोने से ऑनलाइन रेलवे आरक्षण, होटल या रेस्टोरेंट की बुकिंग के लिये किया जाता है। बड़ी एमएनसी कंपनियों में भी इसका प्रयोग व्यापक है जिसमें खाता, इनवॉइस, पे-रोल, स्टॉक नियंत्रण आदि के लिये होता है। तकनीकी उन्नति के आधुनिक संसार में, हमारे लिये विज्ञान के द्वारा कंप्यूटर एक अद्भुत भैंट है। इसने लोगों की जीवन शैली और आदर्श को बदल दिया है। कोई भी बिना कंप्यूटर के अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकता है।



आज टेक्नोलॉजी ने लोगों के जीवन स्तर पर काफी हद तक सुधार दिया है और देश-दुनिया के विकास को एक नया आयाम प्रदान किया है। इसके अनगिनत फायदों को देखकर अब लोग इसके आदि हो चुके हैं। वहीं टेक्नोलॉजी से लोगों को अपनी मानसिक क्षमता का आकलन करने में भी मद्द मिली है। वहीं व्यक्ति अथवा देश का विकास सीधे तौर पर टेक्नोलॉजी से ही जुड़ा है। टेक्नोलॉजी से तात्पर्य उन सभी मेथड, सिस्टम अथवा डिवाइसेस से है, जिसका इस्तेमाल विज्ञान की दुनिया में किसी खोज के प्रयोग के लिए किया जाता है। हालांकि, विज्ञान की दुनिया में इसका उपयोग करने के लिए उचित कौशल, ज्ञान और सामर्थ्य की जरूरत होती है। आज टेक्नोलॉजी का हर किसी के जीवन में खास महत्व है क्योंकि यह न सिर्फ व्यक्ति के विकास में मद्द करती है, बल्कि देश-दुनिया के विकास में भी अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभाती है। वहीं अगर किसी भी देश की विकास की दर धीमी है तो इसका मतलब साफ है कि उस देश की टेक्नोलॉजी काफी पिछड़ी हुई है। टेक्नोलॉजी की मद्द से पिछड़ी हुई औद्योगिक अर्थव्यवस्थाओं की सामाजिक व्यवस्था को भी सुधार लाने में मद्द मिलती है। आज जिंदगी से संबंधित हर काम टेक्नोलॉजी से जुड़ गया है, जिससे जीवन स्तर में न सिर्फ सुधार हुआ है, बल्कि विकास को एक नई दिशा मिली है। टेक्नोलॉजी और आर्थिक विकास एक-दूसरे के पूरक हैं। आर्थिक विकास की दर को सिर्फ और सिर्फ टेक्नोलॉजी के दधारा ही बढ़ाया जा सकता है। टेक्नोलॉजी की मद्द से ही नए-नए उपकरण बनाना और नई खोजें करना संभव हो सका है। इसलिए तकनीकी उन्नति ही आर्थिक प्रगति का मुख्य आधार है। जाहिर है कि विकसित देश इसलिए संपन्न हैं, क्योंकि वहां की उन्नत टेक्नोलॉजी ने उन्हें विकास के नए आयाम प्रदान किए हैं और आर्थिक दर को बढ़ाने में मद्द की है। विज्ञान और टेक्नोलॉजी एक-दूसरे के पूरक है, अथवा उन्नत तकनीकी का इस्तेमाल कर ही आज विज्ञान नई-नई खोजें कर रहा है और विकास की दर को बढ़ाने में मद्द कर रहा है। वहीं आज का युग विज्ञान और तकनीकी का युग है, जिसमें मानव जीवन पूरी तरह विज्ञान और टेक्नोलॉजी पर निर्भर हो चुका है। आज टेक्नोलॉजी और विज्ञान की मद्द से ही इंसान समुद्र की गहराइयों से लेकर आसमान की ऊंचाई तक को माप सकता है। यहीं नहीं विज्ञान और तकनीकी ने इंसान की पहुंच अंतरिक्ष तक बना दी है। टेक्नोलॉजी ने आज मानव जीवन को जितना आसान बना दिया और देश-दुनिया की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में अपना पूर्ण रूप से सहयोग दिया है तो वहीं दूसरी तरफ टेक्नोलॉजी के इस बढ़ते इस्तेमाल ने मनुष्य के स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक प्रभाव डाला है, इसलिए हम सभी को जरूरत के वक्त ही इसका इस्तेमाल करना चाहिए।



मोबाइल फोन को अक्सर “सेल्युलर फोन” भी कहा जाता है। यह मुख्य रूप से वॉयस कॉल के लिए उपयोग किया जाने वाला उपकरण है। वर्तमान में तकनीकी प्रगति ने हमारे जीवन को आसान बना दिया है। आज, एक मोबाइल फोन की मदद से हम दुनिया भर में किसी से भी आसानी से बात कर सकते हैं या वीडियो चैट कर सकते हैं। 1973 से पहले, मोबाइल टेलीफोनी कारों और अन्य वाहनों में स्थापित फोन तक सीमित था। मोटोरोला पहली कंपनी थी जिसने हैंडहेल्ड मोबाइल फोन का उत्पादन किया। 3 अप्रैल, 1973 को, मोटोरोला के एक शोधकर्ता और कार्यकारी, मार्टिन कूपर ने हैंडहेल्ड सब्सक्राइबर उपकरणों से पहला मोबाइल टेलीफोन कॉल किया, जो उनके प्रतिद्वंदी बेल लैब्स के डॉ जोएल.एस.एंगेल को किया गया कॉल था। डॉ. कूपर द्वारा उपयोग किए जाने वाले प्रोटोटाइप हैंडहेल्ड फोन का वजन 1.1 किलोग्राम था और 23 13 4.5 सेंटीमीटर (9.1 5.1 1.8 इंच) मापा गया। प्रोटोटाइप ने केवल 30 मिनट के टॉक टाइम की पेशकश की और पुनः चार्ज करने में 10 घंटे का समय लिया। जॉन एफ.मिशेल, मोटोरोला की प्रमुख पोर्टेबल संचार उत्पादों और कूपर की बॉस ने मोबाइल टेलीफोन उपकरणों के विकास को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चूंकि मिशेल, मोटोरोला को बेतार संचार उत्पादों को विकसित करने में विफल रही। लेकिन उनकी दुरदर्शी सोच ने आज के आधुनिक फोन की नींव रखी। नई तकनीक को तरंगों या पीड़ियों की एक शृंखला में विकसित और रोल आउट किया गया है। “पीड़ी” शब्दावली केवल व्यापक रूप से उपयोग की जाती है जब 3जी लॉन्च किया गया था, लेकिन अब पूर्ववर्ती प्रणालियों का जिक्र करते हुए अब इसका उपयोग पूर्वव्यापी रूप से किया जाता है। अब हम अपने दोस्तों, रिश्तेदारों से किसी भी समय कई ऐप्स के माध्यम से जुड़ सकते हैं। अब हम अपने मोबाइल फोन या स्मार्टफोन को संचालित करके, जिस किसी से भी चाहें, वीडियो चैट कर सकते हैं। इसके अलावा मोबाइल हमें पूरी दुनिया के बारे में अपडेट भी रखता है। आज मोबाइल फोन ने दैनिक जीवन की गतिविधियों के लिए हमारे जीवन को बहुत आसान बना दिया है। आज, कोई मोबाइल फोन पर लाइव ट्रैफिक स्थिति का आकलन कर सकता है और समय पर पहुंचने के लिए उचित निर्णय ले सकता है। इसके साथ मौसम की जानकारी, कैब बुक करना और भी बहुत कुछ। मोबाइल प्रौद्योगिकी के सुधार के साथ, पूरे मनोरंजन की दुनिया अब एक ही उपकरण के अधीन है। जब भी हम नियमित काम से ब्रेक लेना चाहते हैं, तो हम संगीत सुन सकते हैं, फिल्में देख सकते हैं, हमारे पसंदीदा शो देख सकते हैं या पसंदीदा गाने का वीडियो भी देख सकते हैं।



अनुशासित व्यक्ति आजाकारी होता है और उसके पास उचित सत्ता के आजा पालन के लिये स्व-शासित व्यवहार होता है। अनुशासन पूरे जीवन में बहुत महत्व रखता है और जीवन के हर कार्यों में इसकी जरूरत होती है। यह सभी के लिये आवश्यक है जो किसी भी प्रोजेक्ट पर गंभीरता से कार्य करने के लिये जरूरी है। अगर हम अपने वरिष्ठों की आज्ञा और नियमों को नहीं मानेंगे तो अवश्य हमें परेशानियों का सामना करना पड़ेगा और असफल भी हो सकते हैं। हमें हमेशा अनुशासन में होना चाहिये और अपने जीवन में सफल होने के लिये अपने शिक्षक और माता-पिता के आदेशों का पालन करना चाहिये। हमें सुबह जल्दी उठना चाहिये, नियमित दिनचर्या के तहत साफ पानी पीकर शौचालय जाना चाहिये, दाँतों को साफ करने के बाद नहाना चाहिये और इसके बाद नाश्ता करना चाहिये। बिना खाना लिये हमें स्कूल नहीं जाना चाहिये। हमें सही समय पर स्वच्छता और सफाई से अपना गृह-कार्य करना चाहिये।

हमें कभी भी अपने माता-पिता की बातों का निरादर, नकारना या उन्हें दुखी नहीं करना चाहिये। हमें अपने स्कूल में पूरे यूनिफार्म में और सही समय पर जाना चाहिये। कक्षा में स्कूल के नियमों के अनुसार हमें प्रार्थना करना चाहिये। हमें अपने शिक्षकों की आज्ञा का पालन करना चाहिये, साफ लिखावट से अपना कार्य करना चाहिये तथा सही समय पर दिये गये पाठ को अच्छे से याद करना चाहिये। हमें शिक्षक, प्रधानाध्यापक, चौकीदार, खाना बनाने वाले या विद्यार्थियों से बुरा बर्ताव नहीं करना चाहिये। हमें सभी के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिये, चाहे वो घर, स्कूल, कार्यालय या कोई दूसरी जगह हो। बिना अनुशासन के कोई भी अपने जीवन में कोई भी बड़ी उपलब्धि प्राप्त नहीं कर सकता। इसलिये अपने जीवन में सफल इंसान बनने के लिये हमें अपने शिक्षक और माता-पिता की बात माननी चाहिये।

अनुशासन एक क्रिया है जो अपने शरीर, दिमाग और आत्मा को नियंत्रित करता है और परिवार के बड़ों, शिक्षकों और माता-पिता की आज्ञा को मानने के द्वारा सभी कार्य को सही तरीके से करने में मदद करता है। ये एक ऐसी क्रिया है जो अनुशासन में रह कर हर नियम-कानून को मानने के लिये हमारे दिमाग को तैयार करती है। हम अपने दैनिक जीवन में सभी प्राकृतिक संसाधनों में वास्तविक अनुशासन के उदाहरण को देख सकते हैं। सूरज और चाँद का सही समय पर उगना और अस्त होना, सुबह और शाम का अपने सही समय पर आना और जाना, नदियाँ हमेशा बहती हैं, अभिभावक हमेशा प्यार करते हैं, शिक्षक हमेशा शिक्षा देते हैं और भी बहुत कुछ। **TOTAL WORD 407**



भारत में वर्षा ऋतु जुलाई महीने में शुरू हो जाती है और सितंबर के आखिर तक रहता है। ये असहनीय गर्मी के बाद सभी के जीवन में उम्मीद और राहत की फुहार लेकर आता है। इंसानों के साथ ही पेड़, पौधे, चिड़ियाँ और जानवर सभी उत्सुकता के साथ इसका इंतजार करते हैं और इसके स्वागत के लिये छेर सारी तैयारियाँ करते हैं। इस मौसम में सभी को राहत की साँस और सुखन मिलता है। आकाश बहुत चमकदार, साफ और हल्के नीले रंग का दिखाई पड़ता है और कई बार तो सात रंगों वाला इन्द्रधनुष भी दिखाई देता है। पूरा वातावरण सुंदर और आकर्षक दिखाई देता है। सामान्यतः मैं हरे-भरे पर्यावरण और दूसरी चीजों की तस्वीर लेता हूँ जिससे ये मेरे कैमरे में यादों की तरह रहे। आकाश में सफेद, भूरा और गहरा काला बादल भ्रमण करता दिखाई देता है। सभी पेड़ और पौधे नयी हरी पत्तियों से भर जाते हैं तथा उद्यान और मैदान सुंदर दिखाई देने वाले हरे मखमल की घासों से ढक जाते हैं। जल के सभी प्राकृतिक स्रोत जैसे नदिया, तालें, तालाबें, गड्ढें आदि पानी से भर जाता है। सड़कें और खेल का मैदान भी पानी से भर जाता है और मिट्टी कीचड़युक्त हो जाती है। वर्षा ऋतु के छेर सारे फायदे और नुकसान हैं। एक तरफ ये लोगों को गरमी से राहत देती तो दूसरी तरफ इसमें कई सारी संक्रामक बीमारियों के फैलने का डर बना रहता है। यह किसानों के लिये फसलों के लिहाज से बहुत फायदेमंद रहता है लेकिन यह कई सारी संक्रमित बीमारियों को भी फैलाता है। इससे शरीर की त्वचा को काफी असुविधा होती है। इसके कारण डायरिया, पेचिश, टाईफॉइड और पाचन से संबंधित परेशानियाँ सामने आती हैं।

वर्षा ऋतु में जीव जन्तु भी बढ़ने लगते हैं। ये हर एक के लिये शुभ मौसम होता है और सभी इसमें खुशी के साथ छेर सारी मस्ती करते हैं। इस मौसम में हम सभी पके हुये आम का लुत्फ उठाते हैं। वर्षा से फसलों के लिए पानी मिलता है तथा सूखे हुए कुएं, तालाबों तथा नदियों को फिर से भरने का कार्य वर्षा के द्वारा ही किया जाता है। इसीलिए कहा जाता है कि जल ही जीवन है। वर्षा ऋतु में आकाश में बादल छा जाते हैं, वे गरजते हैं और सुंदर लगते हैं। हरियाली से धरती हरी-हरी मखमल सी लगने लगती है। वृक्षों पर नये पत्ते फिर से निकलने लगते हैं। वृक्ष लताएँ मानो हरियाली के स्तम्भ लगते हैं। खेत फूले नहीं समाते, वास्तव में वर्षा ऋतु किसानों के लिये ईश्वर के द्वारा दिया गया एक वरदान है। वर्षा ऋतु में जीव जन्तु भी बढ़ने लगते हैं। ये हर एक के लिये शुभ मौसम होता है और सभी इसमें खुशी के साथ छेर सारी मस्ती करते हैं।



भारत में बेरोजगारी प्रच्छन्न बेरोजगारी, खुले बेरोजगारी, शिक्षित बेरोजगारी, चक्रीय बेरोजगारी, मौसमी बेरोजगारी, तकनीकी बेरोजगारी, संरचनात्मक बेरोजगारी, दीर्घकालिक बेरोजगारी, घर्षण बेरोज़गारी और आकस्मिक बेरोजगारी सहित कई श्रेणियों में विभाजित की जा सकती है। इन सभी प्रकार की बेरोजगारियों के बारे में विस्तार से पढ़ने से पहले हमें यह समझना होगा कि वास्तव में किसे बेरोजगार कहा जाता है? मूल रूप से बेरोजगार ऐसा व्यक्ति होता है जो काम करने के लिए तैयार है और एक रोजगार के अवसर की तलाश कर रहा है पर रोजगार प्राप्त करने में असमर्थ है। जो लोग स्वेच्छा से बेरोजगार रहते हैं या कुछ शारीरिक या मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के कारण काम करने में असमर्थ होते हैं वे बेरोजगार नहीं गिने जाते हैं। हालांकि सरकार ने हर तरह की बेरोजगारी को नियंत्रित करने के लिए कई कार्यक्रम शुरू किए हैं परन्तु अभी तक परिणाम संतोषजनक नहीं मिले हैं। सरकार को रोजगार सृजन करने के लिए और अधिक प्रभावी रणनीति तैयार करने की जरूरत है। बेरोजगारी एक गंभीर समस्या है। शिक्षा की कमी, रोजगार के अवसरों की कमी, कौशल की कमी, प्रदर्शन संबंधी मुद्दे और बढ़ती आबादी सहित कई कारक भारत में इस समस्या को बढ़ाने में अपना योगदान देते हैं। व्यग्रितगत प्रभावों के साथ-साथ पूरे समाज पर इस समस्या के नकारात्मक नतीजे देखे जा सकते हैं। सरकार ने इस समस्या को नियंत्रित करने के लिए कई तरह कदम उठाये हैं। इनमें से कुछ का उल्लेख विस्तार से इस प्रकार है। वर्ष 1978-79 में ग्रामीण क्षेत्रों में पूर्ण रोजगार के अवसर सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार ने इंटीग्रेटेड रूरल डेवलपमेंट प्रोग्राम शुरू किया। इस कार्यक्रम पर 312 करोड़ रुपए खर्च किए गए थे और 182 लाख परिवारों को इससे लाभ हुआ था। सरकार विदेशी कंपनियों में रोजगार पाने में लोगों की मदद करती है। अन्य देशों में लोगों के लिए काम पर रखने के लिए विशेष एजेंसियां स्थापित की गई हैं। बेरोजगारी के मुद्दे को कम करने के प्रयास में सरकार ने छोटे और कुटीर उद्योग भी विकसित किए हैं। कई लोग इस पहल के साथ अपनी जीविका अर्जित कर रहे हैं। इस कार्यक्रम का उद्देश्य शहरी आबादी के लिए स्वयंरोजगार और मजदूरी-रोजगार के अवसर प्रदान करना है। इसमें दो योजनाएं शामिल हैं: यह कार्यक्रम देश में 1752 पिछड़े वर्गों के लिए 1994 में शुरू किया गया था। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले गरीब बेरोजगार लोगों को इस योजना के तहत 100 दिनों तक अकुशल मैनुअल काम प्रदान किया गया था। यह कार्यक्रम 13 राज्यों में शुरू किया गया और मौसमी बेरोजगारी को दूर करने के उद्देश्य से 70 सूखा-प्रवण जिलों को कवर किया गया। अपनी सातवीं योजना में सरकार ने 474 करोड़ रुपये खर्च किए।



26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है यह राष्ट्रीय त्यौहार सभी भारतियों के द्वारा बेहद खुशी तथा हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। यह पर्व लोकतंत्रात्मक गणराज्य होने के महत्व को सम्मान देने के लिये इसको मनाया जाता है, इस दिन को भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय अवकाश के रूप में घोषित किया गया है। इस दिन पुरे देश में सभी स्कूलों में कॉलेजों तथा अन्य शिक्षण संस्थानों राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है। गणतंत्र दिवस के मोके पर हर साल राष्ट्रीय राजधानी, नई दिल्ली में इंडिया गेट पर खास परेड का आयोजन होता है, इस कार्यक्रम में आम नागरिक भी शामिल हो सकते हैं, गणतंत्र दिवस के इस खास मौके पर हजारों की संख्या में लोग राजपथ पर होने वाली इस परेड और कार्यक्रम को देखने के लिए आते हैं। 26 जनवरी की परेड में तीनों सेनाएँ विजय चौक से परेड शुरू कर राष्ट्रपति और राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देते हुए राजपथ से होकर निकलती हैं। यह परेड आर्मी बैंड की मधुर धुनों पर कदम ताल करते हुए लोगों को सम्मोहित कर देते हैं। इसके बाद अनेक राज्यों की एवं सरकारी विभागों की झांकियां निकाली जाती हैं।

गणतंत्र दिवस का कार्यक्रम सुबह प्रधानमंत्री के शहीद ज्योति के अभिवादन से शुरू होता है, प्रधानमंत्री सुबह सबसे पहले इण्डिया गेट पर प्रज्वलित शहीद ज्योति पर जाकर उनका अभिवादन करके राष्ट्र की ओर से शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। इसके बाद राष्ट्रपति भवन से राष्ट्रपति की सवारी विजय चौक की ओर निकलती है, परम्परा के अनुसार राष्ट्रपति के साथ में गणतंत्र दिवस पर आमंत्रित मुख्य अतिथि भी होते हैं। यहां तीनों सेनाओं के सेनाध्यक्ष राष्ट्रपति का स्वागत करते हैं। इसके बाद राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री का अभिवादन स्वीकार कर आसान ग्रहण करते हैं। फिर झंडारोहण और राष्ट्रगान के बाद गणतंत्र दिवस की परेड आरम्भ की जाती है।



ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जनसाधारण में डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के रूप में जाने जाते हैं। वो भारतीय लोगों के दिलों में “जनता के राष्ट्रपति” और “भारत के मिसाइल मैन” के रूप में हमेशा जावित रहेंगे। वास्तव में वो एक महान वैज्ञानिक थे जिन्होंने बहुत सारे आविष्कार किये। वो भारत के एक पूर्व राष्ट्रपति थे जिनका जन्म 15 अक्टूबर 1931 में हुआ (रामेश्वरम्, तमिलनाडु, भारत) और 27 जुलाई 2015 में निधन हुआ था (शिलांग, मेघालय, भारत)। देश के महान वैज्ञानिक और पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे अब्दुल कलाम के जीवन और उनकी उपलब्धियों के बारे में विद्यार्थियों को बताने के लिये हम यहाँ पर बेहद सरल और आसान भाषा में विभिन्न शब्द सीमाओं में कुछ निबंध उपलब्ध करा रहे हैं। डॉ अब्दुल कलाम भारत के एक मिसाइलमैन थे। वो जनसाधारण में ‘जनता के राष्ट्रपति’ के रूप में मशहूर हैं। उनका पूरा नाम अवुल पाकिर जैनुल्लाब्दीन अब्दुल कलाम था। वो एक महान वैज्ञानिक और भारत के 11वें राष्ट्रपति थे। कलाम का जन्म जैनुल्लाब्दीन और आशियम्मा के घर 15 अक्टूबर 1931 को एक गरीब तमिल मुस्लिम परिवार में तमिलनाडु के रामेश्वरम् में हुआ था। अपने शुरुआती समय में ही कलाम ने अपने परिवार की आर्थिक मदद करनी शुरू कर दी थी। उन्होंने 1954 में तिरुचिरापल्ली के सेंट जोसेफ कॉलेज से अपना ग्रेजुएशन और 1960 में चेन्नई के मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से एयरोस्पेस इंजीनियरिंग की पढ़ीई पूरी की।

कलाम ने एक वैज्ञानिक के तौर पर डीआरडीओ (रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन) में कार्य किया जहाँ उन्होंने भारतीय सेना के लिये एक छोटा हेलिकॉप्टर डिज़ाइन किया। उन्होंने ‘इन्कोस्पार’ कमटी के एक भाग के रूप में डॉ विक्रमसाराभाई के अधीन भी कार्य किया। बाद में, कलाम साहब भारत के पहले स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपास्ट्र (एसएलवी-तृतीय) के प्रोजेक्ट निदेशक के रूप में 1969 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन से जुड़ गये। भारत में बैलिस्टिक मिसाइल के विकास के लिये दिये गये अपने महान योगदान के कारण वो हमेशा के लिये “भारत के मिसाइल मैन” के रूप में जाने जायेंगे। 1998 के सफल पोखरन-द्वितीय परमाणु परीक्षण में भी इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वो भारत के तीसरे राष्ट्रपति थे जिसे भारत रत्न से सम्मानित किया गया था (पहले डॉ सर्वपल्ली राधकृष्णन को 1954 में और दूसरे डॉ ज़ाकिर हुसैन को 1963 में)। भारत सरकार में एक वैज्ञानिक सलाहकार के रूप में साथ ही साथ इसरो और डीआरडीओ में अपने योगदान के लिये 1981 में पदम् भूषण और 1990 में पदम् विभूषण से भी सम्मानित किया गया। डॉ कलाम ने बहुत सारी किताबें लिखी जैसे विंग्स ऑफ फायर, इंजीनीयरिंग माइन्ड्स, टारगेट्स 3 बिलीयन इन 2011, टर्निमग प्वॉइंट्स, इंडिया 2020, माई जर्नी आदि।

डॉ ए.पी.जे अब्दुल कलाम का पूरा नाम अवुल पाकिर जैनुल्लाब्दीन अब्दुल कलाम था। मिसाइल मैन और जनता के राष्ट्रपति के रूप में भारतीय इतिहास में वो प्रकाशमान सितारे हैं। उनका जन्म तमिलनाडु में 15 अक्टूबर 1931 को हुआ था। डॉ कलाम का जीवन बेहद संघर्षपूर्ण था हालांकि भारत की नयी पीढ़ी के लिये वो प्रेरणा स्वरूप हैं। वो ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने भारत को एक विकसित देश बनाने का सपना देखा था। जिसके लिये उन्होंने कहा कि “आपके सपने के सच हो सकने के पहले आपको सपना देखना है”。 एक वैमानिकी इंजीनियर होने के अपने सपने को पूरा करने के लिये जहाज में उनकी विशाल इच्छा ने उन्हें सक्षम बनाया। एक गरीब परिवार से होने के बावजूद, उन्होंने कभी-भी अपनी पढ़ाई को नहीं रोका। डॉ कलाम ने तिरुचिरापल्ली में सेंट जोसेफ से विज्ञान में ग्रेजुएशन और 1954 में मद्रास इंस्टीट्यूट से एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी की।



हिन्दू धर्म के अनुसार गंगा नदी भारत की सबसे पवित्र नदी मानी जाती है। इसका प्रमाण हमारे वेदों एवं पुराणों में मिलता है। हमारे धर्मग्रंथों में इसके पवित्रता का वर्णन किया गया है। इसकी कुल लम्बाई 2525 किलोमीटर है तथा अधिकतम गहराई 31 मीटर है। यह भारत की सबसे लम्बी नदी है। प्राचीन काल से इस नदी से लोगों की आस्था जुड़ी है। हिमालय से निकलकर यह नदी सबसे पहले उत्तराखण्ड के हरिद्वार जिले में प्रवेश करती है। हरिद्वार में बारह साल पर कुम्भ का मेला लगता है, जिसमें अनगिनत लोग इसमें स्नान करते हैं। लोगों का मानना है कि इस नदी में नहाने से उनके सारे पाप धुल जाते हैं तथा हमेशा यहां पर भजन कीर्तन होता रहता है। इस नदी में साल के बारह महीने निरन्तर पानी का प्रवाह बना रहता है। गंगा नदी हिमालय से निकलकर भारत के कई राज्यों तथा बांग्लादेश से होकर बंगाल की खाड़ी में गिर जाती है। पश्चिम बंगाल में यह बहुत बड़ा डेल्टा बनाती है। जिसका नाम सुंदरवन डेल्टा है, जो भारत का सबसे बड़ा डेल्टा है। यह लगभग 8,38,200 वर्ग किमी में फैला हुआ है। गंगा नदी में मछली, मगरमच्छ तथा सर्पों की कई प्रजातियां पायी जाती हैं, जिसमें बहुत ही दुर्लभ मीठे पानी वाली डॉल्फिन पायी जाती हैं। वैज्ञानिकों का मानना है, कि इस नदी में बैक्रियोफेज नामक विषाणु पाए जाते हैं जो अन्य खतरनाक वायरस एवं जीवों को जिन्दा नहीं रहने देते। इसलिए माना जाता है कि इस नदी का पानी खराब नहीं होता है। तथा सरकार ने कई प्रकार का अभियान चलाया है ताकि यह प्रदूषित न हो। इस नदी पर अनेक प्रकार की परियोजना बनाई गयी हैं जो जन जन की जरूरतों जैसे सिंचाई, बिजली के माध्यम से पूरा करती हैं। गंगा नदी को पवित्रता की निशानी माना जाता है। साल में लाखों लोग इस नदी पर स्नान, पूजा पाठ तथा भजन कीर्तन करते हैं। गंगा को भागीरथी, मन्दाकिनी व देवनदी उपनामों से जाना जाता है। तथा भागीरथी नाम राजा भगीरथ के नाम पर पड़ा। राजा भगीरथ (इक्ष्वाकुवंशीय समाट् दिलीप के पुत्र) ने अपने साठ हजार पुत्रों का उद्धार करने के लिए भगवान् शंकर से लेकर आये थे। इसका उद्गम स्थल उत्तराखण्ड गढ़वाल क्षेत्र से गंगोत्री गिलेशियर से एक नदी निकलती है जिसका नाम भागीरथी तथा दूसरी तरफ से उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी जिले में संतोपथ गिलेशियर से अलकनंदा नाम से एक नदी निकलती है और यह दोनों आकर आपस में उत्तराखण्ड के हरिद्वार में मिल जाती है, जिसे देवप्रयाग बोला जाता है। वहां से इसका नाम गंगा पड़ता है। प्रयाग पांच प्रकार के होते हैं:



चीन के प्रधानमंत्री के भारत दौरे को ध्यान में रखते हुए दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने यातायात के खास इंतजाम किये हैं। इस दौरान उन के गुजरने वाले रूट आम जनता और सामान्य वाहनों की आवा जाही पर दो दिन प्रतिबंध रहेगा। सुरक्षा व्यवस्था और व्यवधान की वृष्टि से यातायात पुलिस ने आम जनता और वाहनों के लिए दूसरे मार्ग तय किये गये हैं। यातायात पुलिस के अतिरिक्त आयुक्त ने बताया कि इस दौरान सरदार पटेल मार्ग को 19 तारीख से 21 तारीख तक के लिए पंचशील वाला रास्ता बंद किया गया है। इसके लिए वाहन चालक रिंग रोड और वंदे मातरम सड़क का इस्तेमाल कर सकते हैं। ट्रैफिक पुलिस ने लोगों से अनुरोध किया है और सलाह दी है कि वे इस दौरान निर्धारित तय मार्ग का इस्तेमाल करें।

मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि चीन के प्रधानमंत्री की रविवार से शुरू हो रही भारत यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच सीमा विवाद सुलझाने और वास्तविक नियंत्रण रेखा पर हो रहे छोटे-मोटे टकराव टालने के लिए नये समझौते पर सहमति बनाने की कोशिश तेज नजर होती जा रही है। चूंकि भले ही छोटी हो, उसके दुष्परिणाम बड़े हो सकते हैं अवसर भले ही छोटा है, उसके सुपरिणाम बड़े निकल सकते हैं। मैं यहां यह कहना चाहूंगा कि दोस्ती का हाथ आगे बढ़ाने के लिए यह सुनहरा अवसर बहुत अच्छा है। दोनों देश उम्मीद कर रहे हैं कि नव नियुक्त चीनी प्रधानमंत्री की पहल भारत यात्रा के दौरान सीमा सुरक्षा सहयोग समझौते को लेकर बातचीत आगे बढ़ेगी। चीन ने हाल ही में इस संबंध में एक प्रस्ताव भारत को सौंपा है, जिस पर भारत ने चीन के प्रस्ताव पर कुछ संशोधन सुझाव दिये हैं। प्रधानमंत्री के तौर पर अपनी पहली विदेश यात्रा के लिए श्री केकियांग ली ने भारत को चुना है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता और विदेश मंत्रालय में सचिव के मुताबिक, यह इस बात का संकेत है कि भारत को चीन सर्वोच्च प्राथमिकता दे रहा है। ऐसा अनुमान है कि चीन के प्रधानमंत्री सोमवार को भारतीय प्रधानमंत्री के साथ प्रतिनिधि मंडल स्तर की बातचीत करेंगे। इस दौरान सीमा विवाद जल्द से जल्द सुलझाने और वास्तविक नियंत्रण रेखा पर शांति बनाये रखने, छोटे-मोटे टकराव टालने के लिए नये समझौते के प्रारूप पर चर्चा करेंगे, इसके अलावा लद्दाख में हो रही घुसपैठ के मामले में बातचीत होगी। चीनी प्रधानमंत्री मंगलवार को मुंबई में उद्योगपतियों से मिलेंगे।



सभाध्यक्ष जी, किसी भी देश के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास में शिक्षा का विशेष महत्व होता है। शिक्षा मानव गुण को उजागर करती है। शिक्षा के माध्यम से व्याप्त रुद्धिवाद, कुरीति, अंध विश्वास और दूसरी बुराईयों को दूर किया जा सकता है। शिक्षा प्रगतिशील समाज की रचना में योगदान प्रदान करती है। भाग्य वादिता और हीन भावना का अंत हो जाता है। जिससे मनुष्य में आत्म विश्वास पैदा होता है। यद्यपि आज गतिविधियां अत्यंत तीव्रगामी हैं। जीवन की गतिशीलता में शिक्षा कठोरक का कार्य करती है। आज प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ने के लिए शिक्षा का उपकरण अति आवश्यक हो गया है। शिक्षा का ज्ञान प्रसार विकास का रास्ता प्रशस्त करता है। मानव आज शिक्षा की सहायत से ज्ञान विज्ञान, तकनीकी क्षेत्र में आगे बढ़ते हुये, धरती से अंतरक्षि में पहुंच कर ग्रह नक्षत्रों की खोज कर रहा है। प्रकृति पर विजय पाने का स्वप्न शिक्षा के माध्यम से साकार हो सकता है। नदियों का रुख मोड़ना पर्वतों के शिखर पर पहुंचना, सागर की छाती को चीर कर समुद्री संपदा को प्राप्त करना जैसी चीजें शिक्षा के द्वारा मनुष्य के लिए संभव हो सकता है। जन तांत्रिक मूल्यों की प्रतिस्थापना और राष्ट्र के विकास की राह में निरक्षरता को सबसे बड़ी अङ्ग भूमिका मानते हुए ही संविधान में उसको जड़ से दूर करने के लिए पवित्र संकल्प लिया गया था। संविधान के चौथे भाग के अनुसार राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों के अनुच्छेद 43 में कहा गया है कि प्रत्येक राज्य संविधान के लागू होने के बाद दस वर्षों में 14 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा दिलाने का प्रयास करेगा। लेकिन संविधान लागू हुए लंबा अरसा बीत चुका है। प्राथमिक शिक्षा, शिक्षा रूपी इमारत की पहली मंजिल होती है, माध्यमिक और उच्च शिक्षा इमारत की दो अलग-अलग मंजिल हैं, माध्यमिक और उच्च शिक्षा दोनों प्राथमिक शिक्षा की पहली मंजिल पर खड़ी हैं।

सभाध्यक्ष महोदय, अगर नीचे की मंजिल कमजोर हो तो इमारत अधिक समय तक टिकी नहीं रह सकती। इसीलिए प्राथमिक शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। जीवन के उत्थान के लिए शिक्षा अत्यंत आवश्यक है, यह शरीर के लिए मानसिक भोजन के बराबर मानी जानी चाहिए, शिक्षा बिना शरीर का विकास अधूरा रहता है। जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं तो पाते हैं कि ब्रिटिश शासन के दौरान प्रारंभिक शिक्षा के प्रति घोर उदासीतना थी।



महोदय, बड़े लोगों के खेल भी बड़े होते हैं और उनकी बातें भी, ऐसा मैं दबंगी लाल से मिलकर ही जान पाया। वह हमारे क्षेत्र के एक कुविख्यात खिलाड़ी हैं। उनका असली नाम इतिहास के गर्त में दफन हो चुका है और अब वे पूरे इलाके में दबंगी लाल के नाम से ही पहचाने जाते हैं। दबंगी लाल से मिलकर मैं धन्य हो गया। वह खेलों के इतने शौकीन हैं कि जहां एक तरु हमारे क्षेत्र की गिल्ली-डंडा की टीम के आजीवन संरक्षक हैं, वहां दूसरी ओर महिला वाली बाल टीम को भी अपने कब्जे में लेने की खातिर नजरें गड़ाए हुए हैं। उनको इसका पूर्ण विश्वास है कि एक न एक दिन सफलता उनके चरणों में लोटती मिलेगी, उसी तरह जिस तरह जब उन्होंने स्थानीय स्टेडियम पर कृपा दृष्टि डाली थी तो उसका जीर्णोदधार करके ही माने थे। इसी के चलते आज उस स्टेडियम के पड़ोस में उनके द्वारा संचालित निजी स्कूल के विद्यार्थियों को एक क्रीड़ागाह हासिल हो गया है।

हमारे प्रथम मिलन में ही दबंगी लाल ने मुझे बताया कि अपने विद्यार्थी काल में जब वह हाकी खेला करते थे, तब स्टिक का उपयोग दूसरे पक्ष की टंगियां तोड़ने में करते थे और जब क्रिकेट के बैट काह हाथ लगाया था तो मुहल्ले की खिड़कियों के इतने कांच तोड़े कि लोगों ने वहां पर दीवारे उठवा लीं। उनमें अंतरराष्ट्रीय स्तर का प्लेयर होने का ताकत थी, मगर लोकल राजनीति ने उन्हें उठने नहीं दिया। फिर भी स्थानीय स्तर पर ही सही, वह रिकार्ड और कमाई के मोर्चे पर किसी भी खिलाड़ी से उन्नसी नहीं बैठेंगे। जब वेल्थ की चर्चा आ ही गई तो दबंगी लाल की बातों का कामनवेल्थ गेम्स से होते हुए ओलिंपिक में अपने देश के प्रदर्शन पर आ जाना स्वाभाविक था। वह कहने लगे ‘हाय हम न हुए वहां, वरना दुनिया वालों को समझा आते कि असली खेल क्या होता है? हमसे बड़ा एथलीट कौन होगा? होललाइफ भागा दौड़ी में ही गुजरी है। हम अपने जमाने के ऐसे फर्राटा धावक रहे हैं कि कई राज्यों की पुलिस पार्टियां हमारे पीछे भागती रहीं, पर हमसे सोना नहीं छीन सकीं। मुझे पूछना पड़ा वाकई आप इस लेबल के खिलाड़ी रहे हैं। दबंगी लाल अपनी हंसी के स्विमिंगपूल में गोता मारते हुए मुझे समझाने लगे, आज के तैराक तो हमारे सामने कल के छोकरे हैं। फिर भी स्थानीय स्तर पर ही सही, वह रिकार्ड और कमाई के मोर्चे पर किसी भी खिलाड़ी से उन्नसी नहीं बैठेंगे। जब वेल्थ की चर्चा आ ही गई तो दबंगी लाल की बातों का कामनवेल्थ गेम्स से होते हुए ओलिंपिक में अपने देश के प्रदर्शन पर आ जाना स्वाभाविक था।



बेटी पढ़ाओं, बेटी बचाओं अभियान के माध्यम से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने समाज में महिलाओं को सम्मान देने का एक अभिनव प्रयास किया। इसे दुर्भाग्य कहिए या दूरदर्शिता का अभाव कि वर्षों से बेटियों को समाज में उनका उचित स्थान नहीं दिया गया था। कई बेटियों के लिए तो शिक्षा जैसी बुनियादी सुविधाएं भी पहुंच से बाहर थीं। धीरे-धीरे बदलाव आया। माता-पिता ने बेटियों को पढ़ने और खेलने के लिए प्रोत्साहित किया। आज वे हर क्षेत्र में सफलता की गाथा लिख रही हैं और दूसरों को प्रेरणा प्रदान कर रही हैं। एक राष्ट्र के रूप में, हमें अपनी बहनों और बेटियों द्वारा सभी क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर गर्व है। आज लड़कियां समाज के हर क्षेत्र और पहलू को प्रभावित कर अपनी छाप छोड़ रही हैं। फिर वे खेलों में कैसे पीछे रह सकती हैं?

जब मैं लड़कियों को खेल के लिए प्रोत्साहित करने वाले अभियान को देखता हूं तो मुझे इस बात से खुशी मिलती है कि यह अभियान देख की उपलब्धियां बढ़ाने में भी कारगर साबित हो रहा है। बेटी बचाओं-बेटी पढ़ाओं के साथ-साथ इसका विस्तार बेटी खिलाओं तक करना होना। भारत के पास 1951 के एशियाई खेलों की मैरी डिसूजा से लेकर पीटी ऊषा और साक्षी मलिक तक महिला खिलाड़ियों का इतिहास है, जो पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलकर आगे बढ़ रही हैं। महिला खिलाड़ियों ने जो पहचान हासिल की है, वह निरंतर हो रही प्रगति का एक अहम प्रतीक और संकेत है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की खेलों के प्रति व्यक्तिगत रुचि से, जमीनी स्तर पर प्रतिभाओं को तराशने की प्रक्रिया की गति ने तेजी पकड़ी है। उनका हमेशा से मानना रहा है कि लड़कियों को नए मापदंड स्थापित करने की आवश्यकता है, जिससे अन्य महिलाओं को खेलों में बढ़ावा देने के लक्ष्य को हासिल करने से कोई नहीं रोक पाएगा। खेलों इंडिया अभियान ने एक लंबा सफर तय कर महिलाओं को प्रतिस्पर्धा के लिए बेहतर मंच उपलब्ध कराना सुनिश्चित किया है, जो न केवल पुरुषों की बराबरी काह है अपितु कुछ पहलुओं में बेहतर भी है। विशेष यप से ग्रामीण इलाकों की लड़कियों को खेलों में अपनी पहचान बनाने के लिए कड़ी मेहनत करते देख मुझे प्रसन्नता होती है। मुक्केबाजी और कुश्ती अब सिर्फ पुरुषों के खेल नहीं हैं। इन खेलों में महिलाओं ने भी अपना दबदबा कायम करना शुरू कर दिया है।



जब संसद सदस्य अथवा राज्य विधान मंडल का कोई सदस्य उनसे मिलने जाए तो अधिकारी को खड़ा होकर सदस्य महोदय का स्वागत तथा उनसे बिदाई लेनी चाहिए, छोटी-छोटी बातों का प्रतीकात्मक मूल्य होता है। अतः अधिकारियों को संसद तथा राज्य विधान मंडल के सदस्यों के साथ अपने व्यवहार में अत्यधिक सावधान तथा शिष्टापूर्ण होना चाहिए। इसी प्रकार सार्वजनिक समारोहों में बैठने की व्यवस्था करने के लिए, सभी समय काफी ध्यान दिया जाना चाहिए और यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि इस विषय में किसी प्रकार की गलत फहमी की कोई गुंजाइश न रह जाए, संसद सदस्यों की बैठक व्यवस्था के संबंध में राष्ट्रपति द्वारा अनुमोदित किये गये पूर्वतः अधिपत्र में स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया, इसके अनुच्छेद 30 में संसद सदस्यों को पुल जनरल अथवा उसके समकक्ष रैंक के अधिकारियों, भारत सरकार के सचिवों आदि के ऊपर रखा गया है। पूर्वता अधिपत्र के साथ संलग्न अनुदेशों में भी यह निर्धारित किया गया है कि जब एक साथ बहुत से संसद सदस्यों को किसी भारी राज्य समारोहों में आमंत्रित किय जाएं तो उनके लिए आरक्षित स्थान राज्यपालों, मुख्य न्यायाधीश, लोक सभा अध्यक्ष राजदूतों के बाद होना चाहिए, इन अनुदेशों में इसके अतिरिक्त यह व्यवस्था है कि राज्य की विधान मंडलों के जो सदस्य दिल्ली में अपनी उपस्थिति के कारण राजकीय समारोहों में आमंत्रित किये जाएं उनका स्थान संसद सदस्यों के तुरंत बाद रखा जाना चाहिए देर से आने वाले संसद सदस्य तथा राज्य विधान मंडलों के सदस्यों को कोई असुविधा न होने पाये इसलिए उनके लिए नियु सीटों को समारोह के अंत तक आरक्षित रखा जाए और अन्य व्यक्ति को उन पर न बैठने दिया जाए, चाहे वे खाली ही क्यों न रह जाएं, उनको दी जाने वाली सीटें कम से कम इतनी आरामदायक और इतने महत्व के स्थान पर अवश्य होनी चाहिए जितनी कि अधिकारियों के लिए नियत की जाए। संसद तथा राज्य के विधान मंडल के सदस्यों से प्राप्त पत्रों की पावती तत्परता से भेज दी जाए, ऐसे सभी पत्रों पर ध्यान पूर्वक विचार किया जाना चाहिए और उनका उत्तर समुचित स्तर पर तथा शीघ्रता के साथ दिया जाना चाहिए, अधिकारियों को ऐसी सूचना अथवा स्थानीय महत्व के मामलों से संबंधित कोई आंकड़े जो तुरंत उपलब्ध हो और गोपीनय न हों, संसद तथा राज्य विधान मंडलों के सदस्यों द्वारा मांगे जोन पर इनको दे दिये जाने चाहिए!



भाइयों और बहनों, गणतंत्र दिवस के इस शुभ मौके पर मैं आप सबको तहेंदिल से मुबारकबाद देता हूं। यह दिन हमें देश के उन तमाम सेनानियों की याद दिलाता है जिनकी कुर्बानियों की वजह से हम एक आजाद एवं गणतंत्र राष्ट्र के नागरिक हैं। यह दिन देश को आज और मजबूत बनान के लिए हामरी जिम्मेदारियों का एहसास कराता है। हमारे नेताओं ने भारत को एक खुशहाल मुल्क बनाने के सपने देखे थे और धर्म निरपेक्षता तथा लोकतंत्र के सहारे सभी को सामाजिक न्याय, सामाजिक विचारों की आजादी और आपस में एकता से रहने का संकल्प लिया था। हमारा संविधान इन्हीं सब मुद्दों पर बना है जिसमें भारत को एक खुशहाल मुल्क बनाने के इन उद्देश्यों का खास तौर पर साफ-साफ उल्लेख किया गया है। आजादी के बाद देश की एकता और अखंडता को मजबूत बनाने की दिशा में काफी काम हुए हैं। इस रास्ते में जब भी कोई मुश्किल और रुकावटें आई, हमारे देश के लोगों ने अपने मजबूत इरादों और राष्ट्रीयता की भावना के बल पर उनका सफलता के साथ मुकाबला किया। इसके साथ ही साथ तरक्की के लंबे रास्ते तय करते हुए हमारे दश ने हर क्षेत्र में कामयाबियां हासिल की हैं। दुनिया में भारत एक ऐसा मुल्क है, जहां मिली-जुली तहजीब और पुरानी सभ्यता मौजूद है। अनेक धर्म और अनेक भाषाओं से बनी हमारी हिंदुस्तानी तहजीब बहुत ही महान है। अनेकता में एकता ही हमारे भारत की खासियत और पहचान है।

गणतंत्र दिवस हमें, हमारी परंपरा को आभ्र भी मजबूत बनाने की प्रेरणा देता है। देश के बीचों-बीच होने से हम को हमारी शानदार संस्कृति के संगम की खास भूमिका मिली है। यह बड़े गौरव की बात है कि यह प्रदेश अपनी इस भूमिका को बड़े ही अच्छे तरीके से निभा रहा है। जब कभी भी किन्हीं विघटनकारी ताकतों ने प्रदेश के अमन को तोड़ने की कोशिश की यहां के नागरिकों ने प्रेम और भाईचारे की भावना को बरकरार रखते हुए ऐसी ताकतों को पूरी तौर पर खत्म कर दिया। मैं उम्मीद करता हूं कि इसी हिम्मत और हौसले से हम सद्भाव की भावना को ओर ऊंचा उठाएंगे। कुदरत ने इस प्रदेश को खूब सौंगाते दी हैं। जंगल, नदियों और यहां की खनिज संपदा से यह प्रदेश भरपूर है। इन साधनों के भरपूर उपयोग की कोशिशें जारी हैं, लेकिन इस दिशा में और बड़े पैमाने पर काम करने की जरूरत है।



संसद के निचले सदन में विपक्ष की नारेबाजी से आजिज आए लोक सभा अध्यक्ष ओम बिरला ने जैसे सख्त शब्दों में अपनी नाखुशी जाहिर की, कुछ वैसे ही राज्य सभा में सभापति वैकेया नायडू ने अपनी नाराजगी प्रकट की। जहां लोक सभा अध्यक्ष ने विपक्षी सांसदों से नारेबाजी की प्रतियोगिता से बाज आने को कहा, वहीं राज्य सभा के सभापति ने संसद सदस्यों को आत्म निरीक्षण करने और सदन का समय बर्बाद न करने की हिदायत दी। इसमें संदेह है कि इस नाराजगी का कहीं कोई असर विपक्षी दलों के नेताओं पर पड़ेगा। इसके आसार इसलिए नहीं, क्योंकि विपक्षी दलों ने पहले से ही यह तय कर रखा कि कुछ भी हो जाए, संसद को नहीं चलने देना है। विपक्ष ने केवल एकजुटता के अभाव से ग्रस्त दिख रहा है, बल्कि इससे भी कि किन मसलों को प्राथमिकता देनी है और किस तरह? भले ही वह कुछ मुद्दों को तूल देता हुआ दिख रहा हो, लेकिन ऐसा नहीं लगता कि उसे इन मुद्दों पर बहस में दिलचस्पी है। यदि ऐसा कुछ होता तो उसकी ओर से ऐसा माहौल उत्पन्न नहीं किया जाता कि संसद चलने ही न पाए। समझना कठिन है कि विपक्ष संसद की कार्यवाही बाधित कर क्या हासिल करना चाहता है? यदि वह यह समझ रहा है कि संसद न चलने से जनता के बीच कोई अच्छा संदेश जाएगा तो यह संभव नहीं, क्योंकि जन मानस तो राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर कोई सार्थक बहस चाहता है।

इस पर आश्चर्य नहीं कि विपक्ष के हंगामा मचाने वाले रवैये का संज्ञान लेते हुए प्रधानमंत्री ने भाजपा सांसदों को उसकी पोल खोलने को कहा। इस दौरान उन्होंने कांग्रेस को खास तौर पर निशाने पर लिया। उनकी मानें तो कांग्रेस खुद भी संसद नहीं चलने दे रही और अन्य विपक्षी दलों को भी इसके लिए उकसा रही है। वास्तव में यह देखना दयनीय है कि जब कांग्रेस को विपक्ष का नेतृत्व करते हुए उसे दिशा देनी चाहिए, तब वह खुद दिशा हीन दिख रही है। आखिर यह उसकी दिशा हीनता नहीं तो और क्या है कि उसने जैसे कृषि कानून बनाने का वादा अपने घोषणा पत्र में किया था। वैसे ही कानून बन जाने पर उनका विरोध कर रही है। बेहतर हो कि वह 2019 में जारी किए गए अपने घोषणा पत्र को फिर से पढ़े या फिर यह स्पष्ट करे कि उसके यू टर्न लेने की वजह क्या है?



बेरोज़गारी न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में एक बहुत ही गंभीर मुद्दा है। वहां सैकड़ों और हजारों लोग ऐसे हैं जिनके पास रोजगार नहीं है। इसके अलावा, बढ़ती जनसंख्या और नौकरियों की मांग के कारण भारत में बेरोज़गारी की समस्या बहुत गंभीर है। इसके अलावा यदि हम इस समस्या की उपेक्षा करेंगे तो यह देश के विनाश का कारण बनेगी। बेरोज़गारी से तात्पर्य उस स्थिति से है जिसमें कुशल एवं प्रतिभाशाली लोग नौकरी करना चाहते थे। लेकिन कई कारणों से उचित नौकरी नहीं मिल पाती है। अब हम जानते हैं कि बेरोज़गारी क्या है लेकिन बेरोज़गारी का मतलब केवल यह नहीं है कि व्यक्ति के पास नौकरी नहीं है। इसी तरह, बेरोज़गारी में अपनी विशेषज्ञता से बाहर के क्षेत्रों में काम करने वाले लोग भी शामिल हैं। बेरोज़गारी के विभिन्न प्रकारों में प्रच्छन्न बेरोज़गारी, मौसमी बेरोज़गारी, खुली बेरोज़गारी, तकनीकी बेरोज़गारी, संरचनात्मक बेरोज़गारी शामिल हैं। इसके अलावा, कुछ अन्य बेरोज़गारी चक्रीय बेरोज़गारी, शिक्षित बेरोज़गारी, अल्परोजगार, घर्षणात्मक बेरोज़गारी, दीर्घकालिक बेरोज़गारी और आकस्मिक बेरोज़गारी हैं। सबसे बढ़कर, मौसमी बेरोज़गारी, अल्प बेरोज़गारी और छिपी हुई बेरोज़गारी भारत में पाई जाने वाली सबसे आम बेरोज़गारी है।

भारत जैसे देश में आबादी के एक बड़े हिस्से के बेरोजगार होने के कई कारण हैं। इनमें से कुछ कारक हैं जनसंख्या वृद्धि, धीमी आर्थिक वृद्धि, मौसमी व्यवसाय, आर्थिक क्षेत्र की धीमी वृद्धि और कुटीर उद्योग में गिरावट। इसके अलावा, ये भारत में बेरोज़गारी का प्रमुख कारण हैं। साथ ही स्थिति इतनी विकट हो गई है कि उच्च शिक्षित लोग भी सफाई कर्मचारी की नौकरी करने को तैयार हैं। साथ ही सरकार अपना काम गंभीरता से नहीं कर रही है। इन सबके अलावा, आबादी का एक बड़ा हिस्सा कृषि क्षेत्र में लगा हुआ है और यह क्षेत्र केवल फसल या वृक्षारोपण के समय रोजगार प्रदान करता है। इसके अलावा, भारत में बेरोज़गारी का सबसे बड़ा कारण इसकी विशाल आबादी है जो हर साल बड़ी संख्या में नौकरियों की मांग करती है जिसे सरकार और अधिकारी उपलब्ध कराने में असमर्थ हैं। अगर हालात ऐसे ही चलते रहे तो बेरोज़गारी एक बड़ा मुद्दा बन जाएगी। इसके अलावा, किसी अर्थव्यवस्था में निम्नलिखित चीजें होती हैं: गरीबी में वृद्धि, अपराध दर में वृद्धि, श्रम का शोषण, राजनीतिक अस्थिरता, मानसिक स्वास्थ्य और कौशल की हानि। परिणामस्वरूप, यह सब अंततः राष्ट्र के विनाश का कारण बनेगा।



चंद्रयान-3 द्वारा चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव का अन्वेषण भारत के अंतरिक्ष प्रयासों में एक नए युग का प्रतीक है। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास भारत की सफल सॉफ्ट लैंडिंग राष्ट्रीय गौरव का क्षण है, जिसने देश को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के इतने निकट अंतरिक्ष यान उतारने की उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त करने वाले पहले देश के रूप में स्थापित किया है। यह उपलब्धि भारत के लिये मानव जाति और बाह्य अंतरिक्ष के बीच संबंधों को रूपांतरित करने में नेतृत्वकारी भूमिका निभाने का अवसर प्रस्तुत करती है। परिचय: चंद्रयान-3 भारत का तीसरा चंद्र मिशन और चंद्रमा की सतह पर सॉफ्ट लैंडिंग का दूसरा प्रयास है। 14 जुलाई 2023 को चंद्रयान-3 ने श्रीहरिकोटा में अवस्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से उड़ान भरी थी। अंतरिक्ष यान ने 5 अगस्त 2023 को चंद्र कक्षा में निर्बाध रूप से प्रवेश किया। ऐतिहासिक क्षण तब सामने आया जब लैंडर ने 23 अगस्त 2023 को चंद्र दक्षिणी ध्रुव के निकट एक सफल लैंडिंग की।

मिशन के उद्देश्य: चंद्रमा की सतह पर सुरक्षित और सॉफ्ट लैंडिंग का प्रदर्शन करना; रोवर को चंद्रमा पर धूमते हुए प्रदर्शित करना; और स्व-स्थाने वैज्ञानिक प्रयोगों का संचालन करना। घटक: प्रोपल्शन मॉड्यूल चंद्रयान-3 एक तीन-घटक मिशन है जिसमें एक प्रोपल्शन मॉड्यूल, एक लैंडर मॉड्यूल और एक रोवर मॉड्यूल शामिल है। यह लैंडर और रोवर कॉन्फिगरेशन को चंद्र कक्षा के 100 किमी तक ले गया। इस प्रोपल्शन मॉड्यूल में चंद्र कक्षा से पृथ्वी के वर्णक्रमीय और पोलरीमीट्रिक माप का अध्ययन करने के लिये पेलोड शामिल था। लैंडर मॉड्यूल लैंडर मॉड्यूल (विक्रम) एक वैज्ञानिक पेलोड लेकर गया जिसमें चंद्रमा की सतह और वायमंडल का अध्ययन करने के लिये उपकरणों का एक समूह शामिल था। इसमें तापीय चालकता और तापमान के मापन के लिये लैंडिंग स्थल के आसपास भूकंपीयता के मापन के लिये और प्लाज्मा घनत्व एवं इसकी विविधताओं का अनुमान लगाने के लिये शामिल थे। नासा के एक निष्क्रिय लेजर रेट्रोरिफ्लेक्टर ऐरों को लूनर लेजर रेजिंग अध्ययन के लिये समायोजित किया गया था। रोवर मॉड्यूल रोवर मॉड्यूल (प्रज्ञान) चंद्रमा की सतह और उपसतह का अध्ययन करने के लिये उपकरणों का एक समूह लेकर गया जिसमें लैंडिंग स्थल के आसपास के क्षेत्र में मौलिक संरचना की जाँच करने के लिये और शामिल थे। प्रमुख खोज/निष्कर्ष: चंद्र सतह का आश्चर्यजनक तापमान: द्वारा मापन में तापमान 70 डिग्री सेल्सियस तक दर्ज किया गया जिसने वैज्ञानिकों को आश्चर्यचकित किया जो तापमान के 20 से 30 डिग्री सेल्सियस के बीच होने का अनुमान कर रहे थे। चंद्र सतह पर मौजूद तत्वों की पुष्टि,



दुनिया तेज़ी से बदल रही है साथ ही विश्व की अर्थव्यवस्था भी उसी तेज़ी के साथ बदल रही है इस उथल-पुथल भरे दौर में करवट लेती वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ कदम बढ़ाना अपरिहार्य है। इससे सामंजस्य बिठाना और साथ ही विकास के मानदंडों को बनाए रखना किसी चुनौती से कम नहीं है। ऐसे माहौल में विकसित और विकासशील देशों के बीच आपसी संवाद और बेहतर तालमेल होना बेहद अहम है और यही वज़ह है कि जी-20 जैसे एक वैश्विक आर्थिक मंच की परिकल्पना की गई। सितंबर 1999 में अस्तित्व में आने के बाद अब जी-20 विश्व का सबसे शक्तिशाली आर्थिक मंच बन गया है। यह एक ऐसा मंच है जो विविधता और संपूर्णता में विश्वास रखता है। इस बार जी-20 का 13वाँ शिखर सम्मेलन अर्जेटीना की राजधानी ब्यूनस आयर्स में संपन्न हुआ। भारत की ओर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस सम्मेलन में हिस्सा लिया। 1997 के एक बड़े एशियन वित्तीय संकट के बाद यह निर्णय लिया गारा था कि दुनिया की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं को एकजुट होना चाहिये। इसके लिये इन देशों के वित्त मंत्रियों और सेंट्रल बैंकों के गवर्नर्स की एक बैठक आयोजित करने की आवश्यकता महसूस की गई ताकि किसी भी प्रकार के वित्तीय संकट से बचा जा सके। इसकी स्थापना 1999 में 7-देशों अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, जर्मनी, जापान, फ्रांस और इटली के विदेश मंत्रियों ने की थी। जी-20 का उद्देश्य वैश्विक वित्त को प्रबंधित करना था। 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के बाद इन देशों के प्रधानमंत्रियों और राष्ट्रपतियों की बैठक शुरू हुई। और विश्व बैंक के स्टाफ स्थायी होते हैं तथा इनके हेड क्वार्टर भी होते हैं, जबकि जी-20 का स्थायी स्टाफ नहीं होता है और न ही इसका हेड क्वार्टर ही है। यह सिर्फ एक फोरम मात्र है। इस वैश्विक अर्थव्यवस्था में वित्तीय मार्केट, टैक्स, राजकोषीय नीति, आर्थिक भगोड़ों से संबंधित मुद्रे शामिल हैं। इसके अलावा कृषि, रोज़गार तथा ऊर्जा संबंधी विषय भी शामिल हैं। पर्यावरण तथा सतत् विकास भी जी-20 में शामिल प्रमुख मुद्रे हैं। इस समूह का दुनिया की 85 प्रतिशत अर्थव्यवस्था और 75 प्रतिशत व्यापार पर नियंत्रण है। जी-20 का गठन सदस्य देशों के बीच अंतर्राष्ट्रीय नीति में सहयोग, अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संरचना में सुधार, वैश्विक वित्तीय संकट को टालने के उपाय, सदस्य देशों के आर्थिक विकास और सतत् विकास को बढ़ावा देने के मकसद से किया गया। इस संगठन का घोषित लक्ष्य विकसित और विकासशील देशों को एक मंच पर लाना और दुनिया के आर्थिक मुद्रों पर आम राय बनाने की कोशिश करना है। जी-20 का 13वाँ शिखर सम्मेलन कई मायने में काफी खास है।



चिकित्सा, शिक्षा, अर्थव्यवस्था, खेल, नौकरियाँ, पर्यटन आदि विज्ञान और प्रौद्योगिकियों के उदाहरण हैं। ये सभी प्रकार की उन्नति हमें दिखाती हैं कि, कैसे दोनों हमारे जीवन के लिए समान रूप से आवश्यक हैं। हम अपनी जीवन-शैली में प्राचीन समय के जीवन के तरीकों और आधुनिक समय के जीवन के तरीकों की तुलना करके स्पष्ट रूप में अन्तर देख सकते हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में उच्च स्तर की वैज्ञानिक और तकनीकी उन्नति ने बहुत सी खतरनाक बीमारियों के इलाज को सरल बना दिया है जो पहले संभव नहीं था। तकनीकी ने बीमारियों का इलाज दवाइयों और आपरेशन के माध्यम से करने में चिकित्सकों की प्रभावी ढंग से मदद करने के साथ ही भंयकर बीमारियों, जैसे- कैंसर, एड्स, मधुमेह (डायबीटिज़), एलज़ाइमर, लकवा आदि के टीकों के शोध में भी काफी मदद की है।

भारत अब विज्ञान और उन्नत तकनीकी के क्षेत्र में अपने नए आविष्कारों के माध्यम से तेजी से विकास करने वाला देश बन गया है। विज्ञान और तकनीकी आधुनिक लोगों की आवश्यकता और जरूरतों को पूरा करने के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आजादी के बाद, देश के राष्ट्रीय विकास के लिए हमारे देश ने विज्ञान के प्रसार और विस्तार को बढ़ावा देना शुरू किया है। सरकार द्वारा बनाई गई विभिन्न नीतियों ने पूरे देश में आत्मनिर्भरता और टिकाऊ विकास और वृद्धि पर जोर दिया है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी दोनों ने ही देश में असाधारण ढंग से आर्थिक विकास और सामाजिक विकास को उन्नत करने का कार्य किया है। विज्ञान और तकनीकी लोगों के जीवन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है, यह सिंधु घाटी सभ्यता से ही हमारे जीवन का एक महत्वरपूर्ण हिस्सा रहा है। ऐसा पाया गया है कि, आग और पहिये की खोज करने के लिए लगभग पाँच आविष्कार किए गए थे। दोनों ही आविष्कारों को वर्तमान समय के सभी तकनीकी आविष्कारों का जनक कहा जाता है। आग के आविष्कार के माध्यम से लोगों ने ऊर्जा की शक्ति के बारे में पहली बार जाना था। तभी से, लोगों में रुचि बढ़ी और उन्होंने जीवन-शैली को सरल और आसान बनाने के लिए बहुत से साधनों पर शोध के और अधिक कठिन प्रयास करने शुरू कर दिए। भारत प्राचीन समय से ही पूरे संसार में सबसे अधिक प्रसिद्ध देश है हालांकि, इसकी गुलामी के बाद, इसने अपनी पहचान और ताकत को खो दिया था। 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद, इसने भीड़ में अपनी खोई हुई ताकत और पहचान को दुबारा से प्राप्त करना शुरू कर दिया है। वो विज्ञान और प्रौद्योगिकी ही थे,



प्रिलिम्स के लिये: भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, आदित्य-एल1, इसरो के प्रक्षेपण यान, सूर्य-पृथ्वी प्रणाली में स्थित लैग्रेज पॉइंट, सौर प्रज्वाल, कोरोनल मास इजेक्शन मेन्स के लिये: सूर्य की खोज का महत्व, अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत की उपलब्धियाँ जिन्होंने पूरे विश्व में भारत को अपनी वास्तविक पहचान को प्रदान किया है। भारत अब विज्ञान और उन्नत तकनीकी के क्षेत्र में अपने नए आविष्कारों के माध्यम से तेजी से विकास करने वाला देश बन गया है। विज्ञान और तकनीकी आधुनिक लोगों की आवश्यकता और जरूरतों को पूरा करने के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। चर्चा में क्यों? हाल ही में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने अपने पहले सौर मिशन, आदित्य-एल1 का प्रक्षेपण किया। इसका प्रक्षेपण रॉकेट का उपयोग करके किया गया था। इसरो के इतिहास में यह पहली बार था जब के चौथे चरण को दो बार प्रक्षेपित किया गया, ताकि अंतरिक्ष यान को उसकी अंडाकार कक्षा में सटीक रूप से स्थापित किया जा सके। आदित्य-एल1 मिशन: परिचय: आदित्य-एल1, 1.5 मिलियन किलोमीटर की दूरी से सूर्य का अंदर्यान करने वाला पहला अंतरिक्ष आधारित वेधशाला श्रेणी का भारतीय सौर मिशन है। एल1 बिंदु तक पहुँचने में इसे लगभग 125 दिन लगेंगे। एस्ट्रोसैट वर्ष 2015) के बाद आदित्य-एल1 भी इसरो का दूसरा खगोल विज्ञान वेधशाला-श्रेणी मिशन है। इस मिशन की यात्रा भारत के पिछले मार्स ऑर्बिटर मिशन, मंगलयान की तुलना में काफी छोटी है। अंतरिक्ष यान को सूर्य-पृथ्वी प्रणाली के लैग्रेजियन बिंदु 1 (एल1) के चारों ओर एक प्रभामंडल कक्षा में स्थापित करने की योजना है। इस मिशन का उद्देश्य सौर कोरोना, प्रकाशमंडल, क्रोमोस्फीयर और सौर पवन के बारे में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करना है। आदित्य-एल1 का प्राथमिक उद्देश्य सूर्य के विकिरण, ऊर्षमा, कण प्रवाह तथा चुंबकीय क्षेत्र सहित सूर्य के व्यवहार और वे पृथ्वी को कैसे प्रभावित करते हैं, के संबंध में गहरी समझ हासिल करना है। परिचय: लैग्रेज पॉइंट्स अंतरिक्ष में वे विशेष स्थान हैं जहाँ सूर्य और पृथ्वी जैसे दो बड़े परिक्रमा करने वाले पिंडों की गुरुत्वाकर्षण शक्तियाँ एक-दूसरे को संतुलित करती हैं। इसका अर्थ यह है कि एक छोटी वस्तु, जैसे कि अंतरिक्ष यान, अपनी कक्षा को बनाए रखने के लिये अधिक ईंधन का उपयोग किये बिना इन बिंदुओं पर रह सकती है। कुल पाँच लैग्रेज पॉइंट होते हैं, जिनमें से प्रत्येक की अलग-अलग विशेषताएँ हैं। ये बिंदु एक छोटे द्रव्यमान को दो बड़े द्रव्यमानों के मध्य स्थिर पैटर्न में परिक्रमा करने में सक्षम बनाते हैं। एल1 को सौर अवलोकन के लिये लैग्रेज बिंदुओं में सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। एल1 के आस पास प्रभामंडल कक्षा में रखा गया उपग्रह, सूर्य का बिना किसी,



विद्यार्थी जीवन जीना एक अनुभव और सीखने का सबसे सुंदर और महत्वपूर्ण समय होता है। यह उस युवा वर्ग का जीवन होता है जिसमें सभी विद्यार्थी पढ़ाई, खेल-कूद, सामाजिक गतिविधियाँ और संस्कृतिक कार्यक्रमों में संलग्न रहते हैं। यह उनकी मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक विकास की अवधि होती है। विद्यार्थी जीवन अनियमितता का जीवन होता है। इसमें प्रतिदिन नए चुनौतियाँ आती रहती हैं, लेकिन इससे सीखने का अवसर भी मिलता है। यह जीवन संघर्ष, संघटना, सहनशीलता और विनम्रता की सीख प्रदान करता है। विद्यार्थी को अच्छी आदतें और संगठनशीलता की जरूरत होती है, जो उसे अपने जीवन के भविष्य में भी सफलता प्राप्त करने में सहायता करती हैं। विद्यार्थी जीवन एक महत्वपूर्ण अवसर है जिसे हमें समय की महत्वाकांक्षा के साथ उपयोग करना चाहिए। विद्यार्थी जीवन हमें दिमागी, शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध बनाता है। इसके द्वारा हम नई विचारों को अपना सकते हैं और नये सपने देख सकते हैं। यह हमारे जीवन का सबसे अद्वितीय अध्याय होता है, जो हमें अच्छे नागरिक बनाता है। अभी तक हम जो भी सीखते आए हैं, वह हमें विद्यार्थी जीवन से ही प्राप्त होती हैं। इसलिए हमें विद्यार्थी जीवन का समय ध्यान से बिताना चाहिए और अपने जीवन के उच्चतम मानकों को स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए। विद्यार्थी जीवन एक ऐसा महत्वपूर्ण अध्याय है जो हमारे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण और यादगार हिस्सा होता है। यह वह समय होता है जब हम संसार में अपनी पहचान बनाने की शुरुआत करते हैं। विद्यार्थी जीवन में हमें न सिर्फ शिक्षा और ज्ञान की प्राप्ति होती है, बल्कि हम इस दौरान सामाजिक, मानसिक और शारीरिक रूप से भी विकास करते हैं। यह जीवनायापन और आत्म-परिचय की एक अद्वितीय अवधि होती है। विद्यार्थी जीवन का पहला और सबसे महत्वपूर्ण अंग शिक्षा है। विद्यालय में हमें अक्सर विभिन्न विषयों में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलता है। हम पढ़कर और अध्ययन करके अपने दिमाग की शक्ति बढ़ाते हैं। यह हमें न केवल अच्छे अंकों की प्राप्ति कराता है, बल्कि हमारे विचारों को विकसित करके समस्याओं का हल निकालने की क्षमता देता है। विद्यार्थी जीवन में हमें गुरुओं की सच्ची गुणवत्ता, दया और समर्पण की महत्ता समझ में आती है। हमें समय की गुणवत्ता को महसूस करना सिखाया जाता है और हमें उचित अनुशासन का महत्व समझाया जाता है। विद्यार्थी जीवन में हम अन्य विद्यार्थी के साथ सामरिक और साहसिक गतिविधियों में भी भाग लेते हैं। यह हमारे स्वास्थ्य और मनोबल के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। हम समूह में काम करना सीखते हैं और साझा करने की क्षमता विकसित करते हैं।



आधुनिक भारत को आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर होना एक महत्वपूर्ण मिशन है। "आत्मनिर्भर भारत" अर्थात् एक स्वावलंबी और सशक्त भारत के सपने को प्राप्त करने की इच्छा है। इस अभियान का उद्देश्य हमारी आर्थिक, तकनीकी और सांस्कृतिक दृष्टिकोण को सुदृढ़ करके भारत को ग्लोबल मंच पर मजबूती से स्थान दिलाना है। आत्मनिर्भर भारत का मतलब है- स्वदेशी उत्पादन बढ़ाना, नए व्यवसायों को उद्घाटन करना, तकनीकी और विज्ञानिक अभियांत्रिकी में विकास करना और बेरोजगारी का समाधान करना। आत्मनिर्भरता द्वारा हम स्वयं आय उत्पन्न कर सकेंगे और अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर सकेंगे। इस दिशा में, हमें उच्च शिक्षा, नवाचार, सरकारी योजनाओं का सही इस्तेमाल और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने वाले उदाहरणों की आवश्यकता है। यह हमारे देश को स्वयंसेवा, स्वावलंबन और विश्वास की ओर ले जाएगा। इस प्रकार, आत्मनिर्भर भारत न केवल हमारे देश के विकास को गति देगा, बल्कि यह दुनिया में हमारी महत्वपूर्ण उपस्थिति को बढ़ावा देगा। इसलिए, हमें समय पर आत्मनिर्भर बनने की ओर प्रयास करना चाहिए। आत्मनिर्भर भारत, देश को एक मजबूत और स्वतंत्र अर्थव्यवस्था में बदलने के लिए भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया एक अभियान है। इसका उद्देश्य भारत को एक वैश्विक महाशक्ति बनाना है, जो अपनी जरूरतों को पूरा करने में सक्षम हो और अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रतिस्पर्धा कर सके। इस दृष्टि ने हाल के वर्षों में महत्वपूर्ण गति प्राप्त की है, इस विश्वास से प्रेरित है कि सतत विकास और राष्ट्रीय प्रगति के लिए आत्मनिर्भरता महत्वपूर्ण है। आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा में विनिर्माण, प्रौद्योगिकी, कृषि और रक्षा सहित कई क्षेत्र शामिल हैं। यह घरेलू उत्पादन और उद्यमशीलता को बढ़ावा देकर आयात पर देश की निर्भरता को कम करने पर केंद्रित है। स्वदेशी नवाचार और कौशल विकास को प्रोत्साहित करके, सरकार व्यवसायों को फलने-फूलने और राष्ट्र के विकास में योगदान देने के लिए अनुकूल वातावरण बनाना चाहती है। आत्मनिर्भर भारत के प्रमुख पहलुओं में से एक "मेक इन इंडिया" पहल को बढ़ावा देना है। इसका उद्देश्य एक अनुकूल पारिस्थितिकी तंत्र प्रदान करके घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देना और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को आकर्षित करना है। सरकार ने इस दृष्टि का समर्थन करने के लिए व्यापार करने में आसानी, करों का युक्तिकरण और बुनियादी ढांचे में निवेश जैसी नीतियों को लागू किया है। ये उपाय न केवल आर्थिक विकास को बढ़ावा देते हैं बल्कि रोजगार के अवसर भी पैदा करते हैं, अंततः भारतीय कार्यबल को सशक्त बनाते हैं। इसके अतिरिक्त, आत्मनिर्भर भारत आर्थिक परिवर्तन को चलाने के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकी और नवाचार के उपयोग पर जोर देता है।



भारतीय संस्कृति दुनिया की सबसे प्राचीन और विविध संस्कृतियों में से एक है, जो कई हजार वर्षों से फैली हुई है। भारत के विभिन्न संस्कृतियों से प्रभावित होते हुए भारतीय सांस्कृतिक विरासत में उसका संगीत, नृत्य, कला, साहित्य, वास्तुकला, खानपान और धर्म शामिल हैं। यह एक संस्कृति है जो पीढ़ी से पीढ़ी तक भेद-भाव और मूल्यों में गहन रूप से जड़ी हुई है। भारतीय संस्कृति का एक सबसे महत्वपूर्ण पहलू उसकी परिवार मूल्यों पर ध्यान केंद्रित करना है। परिवार समाज की मूल इकाई है और भारतीयों के लिए परिवार कल्याण का बहुत महत्व होता है। परिवार एक ताकत का स्रोत और समर्थन है, और यह व्यक्ति के व्यक्तित्व को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बहुत से भागों में भारत में संयुक्त परिवार व्यवस्था अभी भी प्रचलित है और यह भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण पहलू है। मेहमाननवाजी भारतीय संस्कृति में एक और मूल्य है जो गहन रूप से जड़ी हुई है। भारतीय अपने गर्म और स्वागत करने वाले स्वभाव के लिए जाने जाते हैं, और मेहमानों को बड़ा सम्मान और सम्मान दिया जाता है। मेहमानों को खाने और आश्रय का ऑफर करना एक इयूटी माना जाता है, और यह परंपरा भारत के कई हिस्सों में अभी भी प्रचलित है। बड़ों का सम्मान भारतीय संस्कृति में एक अन्य महत्वपूर्ण मूल्य है। बड़े बुजुर्ग ज्ञान और अनुभव के भंडार होते हैं, और उनकी राय को बहुत महत्व दिया जाता है। बड़ों के लिए पैर छुना सम्मान का प्रतीक के रूप में एक सांस्कृतिक मानदंड है, और यह विनम्रता का प्रतीक माना जाता है। धार्मिकता भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग है, जिसमें धर्म लोगों के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत चार मुख्य धर्मों - हिंदूधर्म, बौद्धधर्म, जैनधर्म और सिखधर्म का जन्मस्थान है - और यह अन्य धर्मों का भी घर है। मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे और चर्चे भारतीय दृश्य को सजाती हैं, और सभी धर्मों के लोग शांति और आध्यात्मिक मार्गदर्शन के लिए इन पूजा स्थलों पर जाते हैं। भारतीय संस्कृति अपने त्योहारों के लिए भी मशहूर है। दीवाली, प्रकाश के त्योहार, भारत में सबसे लोकप्रिय त्योहारों में से एक है, और इसे बड़े उत्साह और खुशी के साथ मनाया जाता है। होली, रंगों के त्योहार, एक और लोकप्रिय त्योहार है जहाँ लोग एक दूसरे पर रंग फेंकते हैं, जो अच्छा और बुरा के विजय को दर्शाता है। नवरात्रि, देवी दुर्गा की पूजा के लिए समर्पित नौ दिनों का त्योहार भी भारत में एक महत्वपूर्ण त्योहार है। भारतीय परिधान भी भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण पहलू है। साड़ी, सलवार-कमीज़ और धोती-कुर्ता परंपरागत भारतीय परिधान हैं जो देश की विविधता को दर्शाते हैं। भारत में हर क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहनावे होते हैं, और यह क्षेत्र की संस्कृति और परंपराओं का प्रतिबिंब होता है।



विज्ञान मानव समाज का एक आवश्यक घटक है और आज हम देखते हैं कि इसने कई उन्नतियों और प्रौद्योगिकी विकासों के लिए जिम्मेदारी ली है। प्राकृतिक दुनिया को समझने और उसे बदलने की क्षमता के साथ, हमने चिकित्सा, परिवहन, संचार और कई अन्य क्षेत्रों में भ्यानक प्रगति की है। हालांकि, किसी भी शक्तिशाली उपकरण की तरह, विज्ञान भी एक वरदान और अभिशाप दोनों हो सकता है, इसके उपयोग के आधार पर। एक ओर विज्ञान ने हमें कई लाभ प्रदान किए हैं जो हमारे जीवन की गुणवत्ता में सुधार करते हैं। विशेष रूप से चिकित्सा विज्ञान मानवता के लिए एक बहुत बड़ा वरदान रहा है, जो अनगिनत जीवन बचाता है और लाखों लोगों के दुख को कम करता है। वैज्ञानिक अनुसंधान के माध्यम से, हमने छोटी आख, पोलियो और मीज़ज़ल्स जैसी विभिन्न बीमारियों के लिए वैक्सीन और इलाज विकसित किए हैं। हमने कैंसर, हृदय रोग और अन्य अधिकांश बीमारियों के उपचार में भी बहुत उन्नति की है, जिससे लाखों मरीजों और उनके परिजनों को आशा मिली है। विज्ञान ने मानव ज्ञान और समझ में बढ़ती हुई महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाई है। वैज्ञानिक विधियों के उपयोग के माध्यम से, हमने परमाणु की संरचना से लेकर ब्रह्माण्ड के उत्पत्ति तक प्राकृतिक विश्व के बारे में बहुत कुछ सीखा है। वैज्ञानिक अनुसंधान ने हमें हमारी दुनिया में हमारी जगह और हमारे अस्तित्व को आकार देने वाले शक्तियों के बारे में एक गहरी समझ दी है। हालांकि, जब विज्ञान गलत तरीके से इस्तेमाल या दुरुपयोग किया जाता है तो यह एक अभिशाप भी हो सकता है। आज हमारा सबसे बड़ा चुनौती यही है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी का वातावरण पर क्या गलत असर पड़ रहा है। फॉसिल ईंधनों के जलाने ने उदाहरण के तौर पर जलवायु परिवर्तन को बढ़ाया है, जिससे समुद्र तल का स्तर बढ़ रहा है, अधिक तेज और अधिक भ्यानक प्राकृतिक आपदाएं हो रही हैं और अन्य गंभीर समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। खेती में कीटनाशक और अन्य रसायनों के उपयोग से मिट्टी का उपयोग नष्ट हो रहा है, जल प्रदूषण और अन्य पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं जो हमारे खाद्य आपूर्ति और हमारी पारिस्थितिकी के स्वास्थ्य को खतरे में डाल रही हैं। एक और मुद्दा यह है कि विज्ञान का दुरुपयोग विनाशकारी उद्देश्यों के लिए होता है। न्यूक्लियर हथियारों के विकास का उदाहरण दिया जा सकता है, जिससे जीवन के भारी नुकसान और तबाही का खतरा होता है। साइबर अटैक और जैव आतंकवाद जैसे नई युद्ध विधियों को बनाने के लिए विज्ञान का उपयोग वैश्विक सुरक्षा और स्थिरता के लिए एक गंभीर खतरा पैदा करता है।



लाल बहादुर शास्त्री भारत के दूसरे प्रधानमंत्री के रूप में सेवा करने वाले प्रमुख भारतीय राजनेता और राजवीय नेता थे। वह 2 अक्टूबर, 1904 को उत्तर प्रदेश के मुगलसराय में जन्मे थे। शास्त्री अपनी सादगी, ईमानदारी और अखंडता के लिए जाने जाते थे और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अपने योगदान और एक मजबूत और समृद्ध भारत के निर्माण के लिए उनका सम्मान व्यापक रूप से था। प्रधानमंत्री के रूप में, शास्त्री भारत को 1965 के भारत-पाक युद्ध सहित एक कठिन दौर से नेतृत्व करने के लिए जिम्मेदार थे। उन्होंने "हरित क्रांति" का चैपियन भी बना दिया था, जो कृषि सुधारों की एक श्रृंखला थी जो भारत को एक स्व-पर्याप्त खाद्य उत्पादक बनाने में मदद करी। शास्त्री के नेतृत्व और उनकी विरासत भारत की पीढ़ियों को आज भी प्रेरित करते हैं, और वह एक सच्चा देशभक्त और महान राजनेता के रूप में याद किया जाता है। वह अपने पद में थे जब 11 जनवरी, 1966 को अन्यायपूर्ण परिस्थितियों में निधन हो गए, लेकिन उनकी याद दुनिया भर के लाखों लोगों के दिल और दिमाग में आज भी जीवित हैं। लाल बहादुर शास्त्री एक प्रख्यात भारतीय राजनीतिज्ञ और राजवादी थे जो भारत के दूसरे प्रधानमंत्री के रूप में सेवा करते थे। उन्होंने 2 अक्टूबर 1904 को उत्तर प्रदेश के मुगलसराय में जन्म लिया था। शास्त्री को उनकी सरलता, ईमानदारी और अखंडता के लिए जाना जाता है, और उनके योगदान के लिए भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और एक मजबूत और समृद्ध भारत बनाने की कोशिशों के लिए वे व्यापक रूप से सम्मानित हैं। शास्त्री जी का राजनीतिक करियर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान शुरू हुआ था, जहाँ उन्होंने सत्याग्रह, अवहेलना और अन्य गैरहिंसक रोजगारों के खिलाफ ब्रिटिश शासन के खिलाफ विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल हुए थे। स्वतंत्रता के बाद, उन्होंने सरकार में विभिन्न पदों को निभाया, जिसमें रेल मंत्री, गृह मंत्री और विदेश मंत्री शामिल थे। प्रधानमंत्री के रूप में, शास्त्री जी को भारत को 1965 के भारत-पाक युद्ध सहित एक कठिन दौर से गुज़रना पड़ा। चुनौतियों के बावजूद, उन्होंने स्थिर और संयत रहकर दृढ़ता और साहस के साथ देश का नेतृत्व किया। उन्होंने भी "हरित क्रांति" का आह्वान किया, जो कृषि सुधारों की एक श्रृंखला थी जिससे भारत को आत्मनिर्भर खाद्य उत्पादक बनाने में मदद मिली। इस समय शास्त्री जी का नेतृत्व एक मजबूत और समृद्ध भारत निर्माण में महत्वपूर्ण था। शास्त्री जी का नेतृत्व और विरासत भारतीयों की कई पीढ़ियों को प्रेरित करते रहते हैं, और वे एक सच्चे देशभक्त और एक महान राजनेता के रूप में याद किए जाते हैं। हालांकि, उनकी असामयिक मृत्यु 11 जनवरी 1966 को एक रहस्य बनी हुई है।



दादाभाई नौरोजी एक प्रसिद्ध भारतीय राष्ट्रवादी और सामाजिक सुधारक थे, जो 19वीं सदी में रहे। उनका जन्म 1825 में बम्बई में हुआ था और उन्होंने ब्रिटिश औपचारिक शासन से भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ाई में एक प्रमुख व्यक्ति बनने का सफर तय किया। नौरोजी ब्रिटिश संसद में चुने गए पहले भारतीय भी थे, जहाँ उन्होंने भारत के हितों और अधिकारों के लिए अथक प्रयास किया। नौरोजी भारतीय स्वायत्तता के एक दृढ़ समर्थक थे और ब्रिटिश आर्थिक नीतियों के विरोध में थे जो भारत की संसाधनों का शोषण करती थी और उसके लोगों को गरीब करती थी। उन्होंने 1876 में भारतीय राष्ट्रीय संघ की स्थापना की, जो भारतीय राजनीतिक और सामाजिक कार्यों को बढ़ावा देने के लिए था। नौरोजी का योगदान भारत की स्वतंत्रता संग्राम में और भारतीयों के अधिकारों के प्रचार-प्रसार में ने महात्मा गांधी जैसे भविष्य के नेताओं के लिए मार्गदर्शन दिया। नौरोजी की विरासत भारत के समृद्ध सांस्कृतिक और राजनीतिक इतिहास का महत्वपूर्ण हिस्सा बनी हुई है। दादाभाई नौरोजी एक प्रख्यात भारतीय राष्ट्रवादी थे और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सबसे प्रमुख व्यक्तियों में से एक थे। उनका जन्म 4 सितंबर, 1825, बॉम्बे, ब्रिटिश भारत में हुआ था। उन्हें "भारत के महान वृद्ध व्यक्ति" भी जाना जाता है। नौरोजी एक पारसी विद्वान, राजनीतिज्ञ, और अर्थशास्त्री थे। उनका योगदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में उनके नाम से जाना जाता है। नौरोजी ब्रिटिश संसद में चुने जाने वाले पहले भारतीय थे। वह लिबरल पार्टी के सदस्य थे और 1892 से 1895 तक संसद के सदस्य के रूप में सेवा करते रहे। अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता के लिए आवाज उठाया और ब्रिटिश द्वारा भारत के आर्थिक शोषण के बारे में भी बोला। नौरोजी का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सबसे महत्वपूर्ण योगदान उनकी "धन का निकास" की संकल्पना थी। उनके अनुसार, ब्रिटिश द्वारा भारत के आर्थिक शोषण किया जा रहा था, और देश से उसकी संपत्ति निकाली जा रही थी। उन्होंने इस विषय पर कई पुस्तकें भी लिखीं, जिनमें "भारत में गरीबी और अंग्रेजी शासन" शामिल थी, जिसमें ब्रिटिश नीतियों के कारण भारत की गरीबी का विवरण दिया गया था। नौरोजी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापक सदस्य थे, और उन्होंने इसकी नीतियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह भारतीय स्वायत्तता के पक्षधर थे और भारत की विविध समुदायों के बीच राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए काम करते थे। नौरोजी शिक्षा में भी गहराई से विश्वास रखते थे और भारतीयों के लिए उपलब्ध शैक्षणिक अवसरों को सुधारने के लिए काम करते थे।



डॉ. बी.आर. अम्बेडकर एक सामाजिक सुधारक और राजनीतिक नेता थे, जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। डालित परिवार में जन्मे उन्हें शुरुआती उम्र से ही भेदभाव और असमानता का सामना करना पड़ा। हालांकि, उनका अध्ययन करने की इच्छा और बुद्धि उन्हें इन रोड़ों से निकल कर उच्च शिक्षा प्राप्त करने में मदद की। उन्होंने भारतीय संविधान के मुख्य वास्तुकार बनकर, समानता और सामाजिक न्याय के लिए जाने जाते सभी लोगों के लिए इसकी व्यवस्था की। अम्बेडकर डालितों और अन्य अल्पसंख्यक समुदायों के अधिकारों के पक्षधर भी थे, और उनका काम एक और इंकलाबी और लोकतांत्रिक भारत के लिए नींव रखता है। उनके देश के प्रति योगदान ने उन्हें भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण आदमी बना दिया है, और उनकी विरासत सामाजिक परिवर्तन और प्रगति के लिए आज भी प्रेरणा देती है। डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर, जिन्हें बाबासाहेब के नाम से जाना जाता है, एक सामाजिक सुधारक, विधिवेत्ता और राजनीतिक नेता थे जिन्होंने आधुनिक भारत को ढांचा देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1891 में मध्य प्रदेश के एमपी के महू में जन्मे अम्बेडकर दलित समुदाय से थे, जो भारत में जाति व्यवस्था के निम्नतम पायदान पर माना जाता था। शुरू से ही असमानता और भेदभाव का सामना करने के बावजूद, अम्बेडकर को उच्च शिक्षा प्राप्त करने का जुनून था। अम्बेडकर ने भारत और विदेशों में प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों से अपनी शिक्षा पूरी की, जैसे न्यूयॉर्क के कोलंबिया विश्वविद्यालय और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स। वह एक प्रख्यात न्यायिक बना जिसने भारत में दलितों और समाज के पिछड़ों के अधिकारों की लड़ाई लड़ी। अम्बेडकर का राष्ट्र के लिए सबसे महत्वपूर्ण योगदान भारतीय संविधान के प्रमुख वास्तुकार के रूप में था। संविधान संशोधन सभा की आयोजन समिति के अध्यक्ष के रूप में, अम्बेडकर भारतीय संविधान के लेखन और ढांचे को तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया। उनके लिए एक समानता और सामाजिक न्याय पर आधारित समाज की दृष्टि संविधान में प्रतिबिंबित है, जो सभी नागरिकों के लिए मूल अधिकारों और स्वतंत्रताओं की प्रदान करता है, चाहे वे किसी भी जाति, धर्म या लिंग के हों। अंबेडकर दलितों और अन्य समाजसीत वर्गों के अधिकारों के पक्षधर थे। उन्होंने उनके अधिकारों के लिए अथक प्रयास किए और शिक्षा और सामाजिक सुधार के माध्यम से उनके समृद्धिकरण की दिशा में काम किया। उन्हें विश्वास था कि शिक्षा दलितों और अन्य समाजसीत वर्गों के सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण की कुंजी है, और उन्होंने उनकी शिक्षा और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए कई शैक्षणिक संस्थाएं स्थापित की।



डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भारतीय राजनीतिक नेता, स्वतंत्र भारत के पहले राष्ट्रपति और स्वतंत्रता सेनानी थे। उनका जन्म 3 दिसंबर, 1884 को बिहार में हुआ था, उन्होंने कलकत्ता में अपनी शिक्षा पूरी की और सफल वकील बनने के बाद उन्होंने अपनी वकालत करियर को छोड़ दिया और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हो गए। वे महात्मा गांधी के निकट संबंधी बन गए। प्रसाद भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाए और ब्रिटिश राज के विभिन्न आंदोलनों और प्रदर्शनों में सक्रिय रहे। वे एक सम्मानित नेता थे और भारतीय संविधान के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद, उन्हें 1950 में भारत के गणराज्य के पहले राष्ट्रपति के रूप में निर्वाचित किया गया, जिस पद को वे 1962 तक निभाते रहे। प्रसाद के योगदान राष्ट्र के लिए अमाप हैं, और उनकी नेतृत्व और दृष्टिदारी अब भी पीढ़ियों को प्रेरित करती हैं। उनकी जनता के कल्याण के प्रति समर्पण और लोकतंत्र और सामाजिक न्याय के प्रति उनकी प्रतिबद्धता उन्हें भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति बनाती हैं। उनकी विरासत हमें एक और समावेशी और लोकतांत्रिक समाज की ओर अपने प्रयासों में गाइड करती रहती है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, भारत के पहले राष्ट्रपति, एक प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, वकील और राजनेता थे। वे 3 दिसंबर, 1884 को भारत के बिहार में जन्मे थे। डॉ. प्रसाद अपने परिवार में सबसे छोटे बच्चे थे और एक पारंपरिक भारतीय परिवार में बढ़े थे। डॉ. प्रसाद एक शानदार छात्र थे और कलकत्ता विश्वविद्यालय में अध्ययन करने के लिए छात्रवृत्ति प्राप्त की थी, जहां उन्होंने कला में अपनी स्नातक और स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की। उन्होंने फिर कानून की शिक्षा ली और 1911 में वकालत के लिए बार में दाखिला लिया। डॉ. प्रसाद ने बिहार में अपनी वकालती करियर शुरू की, जहां वे एक प्रमुख वकील और कानूनी समुदाय के एक आदरणीय सदस्य बन गए। डॉ. प्रसाद भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक दृढ़ समर्थक थे और असहयोग और नागरिक अवज्ञा आंदोलनों में सक्रिय भागीदार थे। उन्हें इन आंदोलनों में शामिल होने के लिए कई बार गिरफ्तार किया गया था लेकिन भारतीय स्वतंत्रता के मुद्दे के प्रति उनकी प्रतिबद्धता बरकरार रही। डॉ. प्रसाद भारतीय संविधान निर्माण सभा के सदस्य थे, जिसने आधुनिक भारत के राजनीतिक और सामाजिक संरचना को आकार दिया था। 1950 में, उन्हें भारत के पहले राष्ट्रपति के रूप में चुना गया, जिस पद को वह 1962 तक संभाले रहे। डॉ. प्रसाद एक लोकप्रिय और सम्मानित राष्ट्रपति थे, और उनकी कार्यकाल में भारत में एकता और अखंडता को बढ़ावा देने के लिए उनकी प्रतिबद्धता का संकेत था।



चंद्रशेखर आज़ाद भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सबसे प्रख्यात क्रांतिकारियों में से एक थे। वह आज़ादी के लिए समर्पित अपने जीवन को समर्पित करने का निर्णय लेने वाले महात्मा गांधी द्वारा 1920 में शुरू की गई असहयोग आंदोलन से गहराई से प्रभावित था। आज़ाद एक उत्कृष्ट छात्र और प्राकृतिक नेता थे। वह 1921 में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (एचआरए) में शामिल हुए थे और अपनी बुद्धिमत्ता और रणनीति विचारधारा के कारण जल्द ही उन्होंने पदों को ऊपर ले जाने में सफलता पाई। आज़ाद ब्रिटिश शासन के खिलाफ कई क्रांतिकारी गतिविधियों का संचालन करने में निर्णायक भूमिका निभाते थे। आज़ाद अपने बहादुरी और भारतीय स्वतंत्रता के पक्ष में अपनी प्रतिबद्धता के लिए जाने जाते थे। 1931 में, अलाहाबाद में ब्रिटिश पुलिस ने आज़ाद को जकड़ लिया था, और उन्होंने सरेंडर नहीं करने के बजाय अपनी जान लेने का फैसला किया। उन्होंने अपने अंतिम गोली से खुद को गोली मार दी और अपने जीवन में कभी भी कब्जे में नहीं लिया। भारत सरकार ने उनकी याद में डाक टिकट जारी करके और कई संस्थानों के नाम उनके नाम पर रखकर उनकी याद को सम्मानित किया है। चंद्रशेखर आज़ाद हमेशा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक वीर और शहीद के रूप में याद किया जाएगा। चंद्रशेखर आज़ाद भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सबसे प्रख्यात क्रांतिकारियों में से एक थे। वह आज़ादी के लिए समर्पित अपने जीवन को समर्पित करने का निर्णय लेने वाले महात्मा गांधी द्वारा 1920 में शुरू की गई असहयोग आंदोलन से गहराई से प्रभावित था। आज़ाद एक उत्कृष्ट छात्र और प्राकृतिक नेता थे। वह 1921 में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (एचआरए) में शामिल हुए थे और अपनी बुद्धिमत्ता और रणनीति विचारधारा के कारण जल्द ही उन्होंने पदों को ऊपर ले जाने में सफलता पाई। आज़ाद ब्रिटिश शासन के खिलाफ कई क्रांतिकारी गतिविधियों का संचालन करने में निर्णायक भूमिका निभाते थे, जिसमें काकोरी ट्रेन डैकेती और ब्रिटिश पुलिस अधिकारी जे।पी. सॉन्डर्स की हत्या शामिल थी। आज़ाद अपने बहादुरी और भारतीय स्वतंत्रता के पक्ष में अपनी प्रतिबद्धता के लिए जाने जाते थे। उनके बारे में जाना जाता था कि वह बहादुरी के लिए जाने जाते थे। उन्होंने फामसली कहा, "दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे, आज़ाद ही रहेंगे, आज़ाद ही रहेंगे"। 1931 में, अलाहाबाद में ब्रिटिश पुलिस ने आज़ाद को जकड़ लिया था, और उन्होंने सरेंडर नहीं करने के बजाय अपनी जान लेने का फैसला किया। उन्होंने अपने अंतिम गोली से खुद को गोली मार दी और अपने जीवन में कभी भी कब्जे में नहीं लिया। चंद्रशेखर आज़ाद के जीवन और उनकी त्याग को भारत और दुनिया भर में लोगों को प्रेरित करते हैं।



इंद दुनिया भर में मुस्लिमों द्वारा मनाए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है। यह त्योहार रमज़ान, उपवास का महीना, के समाप्त होने की निशानी है। इंद खुशी, खुशहाली और उत्सव का समय होता है। मुस्लिम बड़ी संख्या में नमाज पढ़ने, उपहार और मिठाई विनिमय करने, और स्वादिष्ट खाना आनंद लेने के लिए एकत्र होते हैं। दिन मुस्लिम लोगों के द्वारा मस्जिदों या खुले मैदानों में जमात में इंद की नमाज पढ़कर शुरू होता है। नमाज के बाद लोग अपने रिश्तेदारों और दोस्तों को मिलने जाते हैं, उपहार और मिठाई विनिमय करते हैं और स्वादिष्ट खाना साझा करते हैं। यह एक भी धर्म विशेषज्ञ एवं संसाधन का दान करने का समय होता है, क्योंकि मुस्लिम लोग कम सौभाग्यशाली लोगों की मदद करने और खुशी फैलाने में विश्वास रखते हैं। इंद मुस्लिम लोगों के बीच क्षमा, प्यार और एकता का समय होता है। यह अल्लाह के आशीर्वादों का उत्सव है और परिवार और समुदाय के महत्व को याद रखने का समय है। इंद एक सुंदर त्योहार है जो लोगों को एकत्रित करता है और खुशी और उमंग फैलाता है। इंद दुनिया भर में मुस्लिमों द्वारा मनाए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है। यह त्योहार रमज़ान, उपवास का महीना, के समाप्त होने की निशानी है। इंद खुशी, खुशहाली और उत्सव का समय होता है। मुस्लिम बड़ी संख्या में नमाज पढ़ने, उपहार और मिठाई विनिमय करने, और स्वादिष्ट खाना आनंद लेने के लिए एकत्र होते हैं। दिन मुस्लिम लोगों के द्वारा मस्जिदों या खुले मैदानों में जमात में इंद की नमाज पढ़कर शुरू होता है। नमाज के बाद लोग अपने रिश्तेदारों और दोस्तों को मिलने जाते हैं, उपहार और मिठाई विनिमय करते हैं और स्वादिष्ट खाना साझा करते हैं। यह एक भी धर्म विशेषज्ञ एवं संसाधन का दान करने का समय होता है, क्योंकि मुस्लिम लोग कम सौभाग्यशाली लोगों की मदद करने और खुशी फैलाने में विश्वास रखते हैं। इंद मुस्लिम लोगों के बीच क्षमा, प्यार और एकता का समय होता है। यह अल्लाह के आशीर्वादों का उत्सव है और परिवार और समुदाय के महत्व को याद रखने का समय है। इंद एक सुंदर त्योहार है जो लोगों को एकत्रित करता है और खुशी और उमंग फैलाता है। इंद की उत्सवों में क्षेत्र से क्षेत्र तक अलग-अलग तरीकों से मनाई जाती है, लेकिन उत्सव की भावना समान रहती है। कुछ देशों में, लोग पारंपरिक कपड़े पहनते हैं और उनके घरों को लाइट और आभूषण से सजाते हैं। कुछ अन्य देशों में, लोग आम पार्क में जाते हैं या परिवारिक पिकनिक आयोजित करते हैं। कुछ देशों में उत्सव तीन दिन तक चलता है और लोग आपस में भेंटे और शुभकामनाएं और उपहारों के लिए आते हैं। सारांश में, इंद एक उत्सव है जो दुनिया भर के मुसलमानों के लिए बहुत महत्व रखता है। यह माफी,



दशहरा, जिसे विजयदशमी के नाम से भी जाना जाता है, एक लोकप्रिय हिंदू त्योहार है जो भारत भर में मनाया जाता है। यह सितंबर या अक्टूबर महीने में आता है और नौ दिन के नवरात्रि उत्सव के समापन को दर्शाता है। त्योहार हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान राम द्वारा राक्षस राजा रावण की पराजय से प्रतीत होने वाले अच्छे के विजय का सम्बोधन करता है। इस दिन, लोग बुराई पर अच्छाई की विजय का जश्न मनाने के लिए रावण, उसके भाई कुंभकर्ण और उसके बेटे मेघनाद की पुतलियों को जलाते हैं। यह भी खाने का समय होता है, मिठाई साझा करने का समय होता है और दोस्तों और परिवार के साथ उपहारों का आदान-प्रदान करने का समय होता है। भारत के कुछ हिस्सों में, दशहरा फसल का उत्सव के रूप में भी मनाया जाता है और खेती के मौसम के समाप्त होने का संकेत देता है। किसान अपने उपकरणों की पूजा करते हैं और एक उपजाऊ फसल के लिए भगवान का आभार व्यक्त करते हैं। दशहरा खुशी और प्यार फैलाने का समय होता है। यह एक ऐसा त्योहार है जो सभी उम्र और पृष्ठभूमि के लोगों को एकजुट करता है और हमें सही और न्याय के लिए खड़े होने की महत्व को याद दिलाता है। दशहरा, जिसे विजयदशमी के नाम से भी जाना जाता है, भारत में मनाए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है। यह नवरात्रि की धूमधाम से भरी अंतिम दशका है जो दस दिनों तक चलता है। देश भर में इस त्योहार का बड़े उत्साह और जोश के साथ मनाया जाता है। यह अच्छे का विजय का प्रतीक है और इसे उत्साह और उत्साह के साथ मनाया जाता है। यह त्योहार हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान राम द्वारा राक्षस राजा रावण पर जीत का उत्सव है। भगवान राम ने अपने भाई लक्ष्मण और मोनकी देवता हनुमान की सहायता से रावण को हराया और उसकी कैद से अपनी पत्नी सीता को बचाया। भगवान राम की जीत अच्छे का विजय को दर्शाती है और इसे दशहरा के रूप में मनाया जाता है। किसान अपने उपकरणों की पूजा करते हैं और भगवानों को अपनी फसल के लिए धन्यवाद देते हैं। त्योहार खाने-पीने, मिठाई साझा करने और दोस्तों और परिवार से उपहार आदि विनम्रता से बढ़ता है। इस दिन, लोग बुराई पर अच्छाई की जीत का जश्न मनाने के लिए रावण, उसके भाई कुंभकर्ण और उसके पुत्र मेघनाद की पुतले जलाते हैं। इसे रावण दहन या रावण की पुतलों को जलाना भी कहते हैं। त्योहार में कला कार्यक्रम भी शामिल होते हैं, जिसमें नृत्य और संगीत प्रदर्शन शामिल होते हैं, और पारंपरिक मेलों में लोग खाने-पीने, खेल और अन्य गतिविधियों का आनंद लेने के लिए एक साथ आते हैं।



जैव विविधता, हमारे पृथ्वी का एक अद्वितीय और महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो हर जीवन का स्रोत है और हमारे पर्यावरण को संतुलित रखने में मदद करता है। यह विविधता जीवों, पौधों, और माइक्रोऑर्गेनिज्मों के अद्वितीय समृद्धि को संकेतित करती है, जो समृद्धि का आदान-प्रदान करने में सहारा करते हैं। जैव विविधता का अर्थ है जीवों की विविधता, जिसमें विभिन्न प्रजातियों, वंशों, और जीवाणुओं का विविध निरूपयोग होता है। यह सिर्फ जीवों की अवधारित संख्या नहीं होती, बल्कि उनकी सांगठनिक संरचना, आपसी संबंध, और उनके साथी पौधों और प्रदूषकों के साथ संबंधों का भी हिस्सा है। जैव विविधता का अभ्यास न केवल विज्ञानिकों के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि हम सभी के लिए भी क्योंकि यह हमारे जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है और हम सभी को इसके प्रति संबंधित बनाता है। जैव विविधता हमारे जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके बिना हमारा जीवन असम्पूर्ण है। वनस्पतियाँ और प्राणियों का समृद्धि और संतुलन को बनाए रखने के लिए जैव विविधता की आवश्यकता होती है। वनस्पतियाँ ऑक्सीजन उत्पन्न करती हैं जो हमारी साँस लेने के लिए आवश्यक है, जबकि प्राणियाँ हमें खाद्य और अन्य उत्पादों का प्रदान करती हैं। जैव विविधता का आधार वन्यजीव संरक्षण पर है, जो वन्यजीवों की सुरक्षा और उनके निवास स्थानों की संरक्षण को लेकर है। जंगल और अन्य वन्यजीव संरक्षण क्षेत्रों को सुरक्षित रखने से वन्यजीवों के लिए सही आवास और आहार उपलब्ध होता है, जिससे उनकी संख्या बढ़ी रहती है और उनकी सुरक्षा होती है। जैव विविधता का संरक्षण करना हम सभी की जिम्मेदारी है। इसे बनाए रखने के लिए हमें सबसे पहले अपने आत्मजागरूकता और शिक्षा का अभ्यास करना चाहिए। लोगों को जैव विविधता के महत्व के बारे में शिक्षित करना और उन्हें सुरक्षित रखने के लिए कदम उठाने की आवश्यकता है। विभिन्न स्तरों पर समर्थन मिलना आवश्यक है, जैसे कि सरकारी नीतियों का समर्थन करना, जैव विविधता के प्रमुख क्षेत्रों में संरचनाएं बनाना और लागू करना, वन्यजीव संरक्षण क्षेत्रों का समर्थन करना, और जैव विविधता संरक्षण के लिए विशेषज्ञ गठन करना। आधुनिक जीवनशैली में हमारी अत्यधिक उपभोग और विकास के लिए कई बार हमने जैव विविधता का असुविधाजनक उपयोग किया है, जिससे इसे बचाने में कठिनाई हो रही है। वन्यजीवों की तस्करी, वन्यजीवों के निवास स्थानों की संशोधन, और अवैध उधारण के कारण जंगलों का कटाई आदि ने इस प्रश्न को बढ़ा दिया है। जैव विविधता का संरक्षण न केवल हमारे वातावरण के सुरक्षित रखने में मदद करेगा, बल्कि हमारे आने वाले पीढ़ियों के लिए भी एक स्वस्थ और समृद्धिशील भविष्य की गारंटी होगी।



प्रस्तावना: करपूरी थाकुर, भारतीय राजनीति के एक अद्भुत नेता थे जो अपने सादगी, सच्चाई, और कर्मयोग के माध्यम से लोगों के दिलों में बसे रहे हैं। उनका योगदान बिहार राज्य की राजनीति में नहीं, बल्कि पूरे देश में महत्वपूर्ण रहा है। उन्हें 2024 में भारत रत्न से नवाजा गया है, जो एक और उनकी महत्वपूर्ण योगदान को मान्यता प्रदान करता है। करपूरी थाकुर का जीवन परिचय: करपूरी थाकुर का जन्म एक साधुपुर, बिहार के छोटे से गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम रामनरायण था और माता का नाम रमेश्वरी देवी था। उनका बचपन साधुपुर के गाँव में बीता और यहाँ के गुरुकुल में उन्होंने शिक्षा प्राप्त की। नेतृत्व का उदय: करपूरी थाकुर ने अपने शैलीशील और निर्भीक नेतृत्व के लिए बहुत चर्चा की है। उन्होंने संघर्ष भरी जीवन में अपने मौजूदा स्थान को प्राप्त करने के लिए कई बड़े और छोटे आंदोलनों में हिस्सा लिया है। वह बिहार राज्य के मुख्यमंत्री बनने के बाद, गरीबों और असहाय लोगों के लिए विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की शुरुआत करने में सक्रिय रूप से शामिल हुए। उनका एक शक्तिशाली और सशक्त बिहार बनाने का संकल्प था। करपूरी थाकुर की कृतियाँ: वह एक सुशिक्षित और बुद्धिमान नेता थे जो बिहार के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत रहे। उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य, और गरीबी की समस्याओं को हल करने के लिए कई योजनाएं चलाई। उनके द्वारा स्थापित किए गए कई सामाजिक कार्यक्रमों ने लोगों को सामाजिक और आर्थिक रूप से सुधारने में मदद की। करपूरी थाकुर का योगदान: करपूरी थाकुर ने अपने नेतृत्व के क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान बनाई और उन्होंने बिहार को सशक्त राज्य बनाने के लिए कई कदम उठाए। उनकी सरकार ने बिहार में शिक्षा, स्वास्थ्य, और गरीबी की समस्याओं का समाधान करने के लिए कई पहलुओं पर काम किया। उन्होंने बिहार को आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से मजबूत बनाने के लिए निरंतर प्रयास किया। भारत रत्न से सम्मानित: 2024 में करपूरी थाकुर को भारत रत्न से नवाजा गया है, जो एक बहुत ही श्रेष्ठ सम्मान है। यह उनके सेवाभाव, उत्कृष्टता, और उनके समर्पण को मान्यता प्रदान करता है जो उन्होंने बिहार और देश के लिए दिया। इससे नहीं सिर्फ उन्हें, बल्कि उनके कार्यों को भी महत्वपूर्ण दर्जा मिलता है और यह लोगों को प्रेरित करता है अपने समर्पण और कठिनाईयों के बावजूद योगदान करने के लिए। समापन: करपूरी थाकुर ने अपने जीवन में एक सच्चे नेता के रूप में अपनी पहचान बनाई है। उनके कर्मयोगी और सादगीपूर्ण उत्तरदाता व्यवहार ने उन्हें लोगों के दिलों में स्थान दिलाया है। उनका योगदान और सेवाभाव आज भी हमें प्रेरित कर रहा है और भारत रत्न से सम्मानित होने के साथ, उनका योगदान और भी महत्वपूर्ण हो गया है।



प्लास्टिक प्रदूषण एक ऐसी समस्या है जो हमारे पूरे प्रकृति को खतरे में डाल देती है। प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग और उसकी अधिक मात्रा में बर्तनों, गर्मी से गर्म भोजन की पैकेटों, बोतलों आदि में हो रहा है। इससे पैदा होने वाले प्लास्टिक के कचरे का सही से प्रबंधन कर पाना मुश्किल हो रहा है और इससे वायरमेंट को भी काफी नुकसान हो रहा है। इस समस्या को समझते हुए, कई सरकारें ने प्लास्टिक के इस अत्यधिक उपयोग को नियंत्रित करने के लिए प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया है। प्लास्टिक का उपयोग सुरक्षित और साफ रहने के लिए आवश्यक है, लेकिन जब हम इसे अत्यधिकता में उपयोग करते हैं और फिर इसे सही तरीके से नष्ट नहीं करते हैं, तो यह प्रदूषण का कारण बन जाता है। प्लास्टिक के बहुपकारी और बहुरूपी गुणों के कारण, इसे अधिक मात्रा में बनाया जा रहा है, जिससे इसका प्रबंधन करना और भी कठिन हो रहा है। इससे निकलने वाले कचरे की जमावट में प्लास्टिक का हिस्सा बढ़ रहा है, जिससे पर्यावरण को बड़ा नुकसान हो रहा है। प्लास्टिक प्रदूषण के बढ़ते खतरों को समझते हुए, कई देशों ने प्लास्टिक के इस अत्यधिक उपयोग को रोकने के लिए कदम उठाए हैं। भारत में भी कई राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाने का निर्णय किया है। इसका मुख्य उद्देश्य प्लास्टिक प्रदूषण को कम करना और सुरक्षित पर्यावरण की स्थापना करना है। प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाने के फायदे अनेक हैं। पहले तो, यह प्रदूषण को कम करने में मदद करेगा और वायरमेंट को साफ और हरित बनाए रखने में सहारा प्रदान करेगा। दूसरे, यह सामाजिक और आर्थिक वृष्टि से भी फायदेमंद होगा। प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाने से नए पर्यावरण साथी उत्पन्न होंगे जो ग्रासरूट स्तर पर रोजगार का अवसर प्रदान करेंगे। तीसरे, इससे हमारे जीवन में स्वस्थता और भविष्य की सुरक्षा होगी, क्योंकि प्लास्टिक का प्रदूषण विभिन्न रोगों का कारण बनता है। प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाने के पहले, हमें इसके प्रति जागरूकता बढ़ानी चाहिए। लोगों को यह सिखाना चाहिए कि प्लास्टिक का सही तरीके से उपयोग कैसे किया जा सकता है और उसे सही तरीके से कैसे नष्ट किया जा सकता है। साथ ही, हमें विकसित तकनीकी समाधानों की ओर बढ़ना चाहिए जो प्लास्टिक के प्रदूषण को कम करने में मदद कर सकते हैं। इस प्रकार, हमें सभी को मिलकर प्लास्टिक प्रदूषण को रोकने का कारगर तरीका ढूँढ़ना चाहिए। यह समय है कि हम सभी अपनी जिम्मेदारी समझें और इस समस्या का समाधान निकालें ताकि हमारे आने वाले पीढ़ियां भी स्वस्थ और हरित पर्यावरण में जीवन बिता सकें।